

CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2026 with Solution PDF-Set 2/5/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)



निर्धारित समय: 3 Hours

अधिकतम अंक: 80

सामान्य निर्देश

- (i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- (ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
- (iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. जीवन के लिए जागना जितना ज़रूरी है, उतना ही ज़रूरी सोना है। दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे के सहारे पर हैं। नींद का न आना भी एक विकार है, जिससे अनेक प्रकार की बाधाएँ आ सकती हैं और जो प्राणी रात-दिन सोता ही रहे, वह तो निष्क्रिय ही है। यदि दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे की सहायता करती रहें – आदमी जागे कर्म करने के लिए, सोये विश्राम के लिए – तो जीवन सुखी होता है, लेकिन जागना जीवन का मुख्य लक्षण है, सोना अर्थात् – विश्राम, तो केवल उसका सहायक है। इसलिए, जागृति जीवन और अभ्युदय का चिह्न है और निद्रा पतन तथा हास का। जागृति रजोगुण-प्रधान क्रिया है, निद्रा में तमोगुण की प्रधानता होती है। कम-से-कम सोने के लिए अनेक उपाय और साधन बताए गए हैं। अधिक-से-अधिक सोने के लिए आज तक किसी ने कोई उपाय नहीं बताया – उसी तरह, जैसे स्वस्थ रहने के लिए तरह-तरह के प्रयत्न किए जाते हैं, पर बीमारी के लिए भी किसी ने कोई प्रयत्न किया है, ऐसा कभी सुनने में नहीं आया। वास्तव में स्वास्थ्य का न होना ही बीमारी है – उसी तरह, जैसे प्रकाश का न होना ही अंधकार है। आदमी जितना ही कम सोये उतना ही जागरूक है, यहाँ तक कि कई विद्वानों का मत है, सोना कोई आवश्यक क्रिया नहीं। संभव है तपस्वियों के लिए सोना आवश्यक न हो, उनकी प्रकृति में रज और सत ही रह जाता हो, तम की सर्वथा हानि हो जाती हो, पर साधारण प्राणियों के लिए भी यही नियम लागू है कि मात्रा से अधिक सोने में हानि है, अतएव जब हम किसी राष्ट्र के विषय में जागृति की कामना करते हैं, तो इसका बोध यह होता है कि वह राष्ट्र मात्रा से अधिक तमोगुणी हो गया और उसमें जीवन की मात्रा ज़रूरत से कम है।

[10 अंक]

1(i). 'जागृति' और 'निद्रा' किन गुणों से संबंधित हैं ?

[1 अंक]

- (A) सत और तम
- (B) रज और सत
- (C) सत और रज
- (D) रज और तम

सही उत्तर: (D) रज और तम

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में जागृति और निद्रा से जुड़े गुणों का क्रम पूछा गया है। उत्तर गद्यांश के प्रत्यक्ष कथन से लेना है।
- गुणों को उसी क्रम में रखना आवश्यक है, जिस क्रम में प्रश्न में दोनों अवस्थाएँ दी गई हैं।

चरण 1: निर्णायक कथन पहचानें लेखक स्पष्ट कहता है कि जागृति रजोगुण-प्रधान क्रिया है और निद्रा में तमोगुण की प्रधानता होती है। इसलिए पहले रज और फिर तम आएगा।

चरण 2: विकल्पों का मिलान करें (A) में जागृति के लिए सत दिया है, जो कथन से मेल नहीं खाता। (B) में निद्रा के लिए सत है। (C) में दोनों गुणों का क्रम गलत है। केवल (D) में रज और तम का सही युग्म है।

चरण 3: निष्कर्ष जागृति रजोगुण और निद्रा तमोगुण से संबंधित हैं। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले जागृति के लिए रज और फिर निद्रा के लिए तम लिखकर विकल्प का क्रम मिलाएँ।

1(ii). गद्यांश के अनुसार सोना अर्थात् निद्रा किसकी सहायक है ?

[1 अंक]

- (A) स्वास्थ्य की
- (B) जागने की
- (C) विश्राम की
- (D) मृत्यु की

सही उत्तर: (B) जागने की

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में सोने को विश्राम और जागने को कर्म से जोड़ा गया है।
- प्रश्न सहायक क्रिया और मुख्य क्रिया के संबंध का परीक्षण करता है।

चरण 1: मुख्य और सहायक क्रिया पहचानें लेखक के अनुसार जागना जीवन का मुख्य लक्षण है। सोना अर्थात् विश्राम केवल उसका सहायक है। यहाँ उसका का संकेत जागने की क्रिया की ओर है।

चरण 2: अन्य विकल्पों को परखें (A) स्वास्थ्य का उल्लेख अलग उदाहरण में है। (C) में विश्राम स्वयं निद्रा का अर्थ है, वह इस संदर्भ में उसकी सहायता पाने वाली मुख्य क्रिया नहीं है। (D) मृत्यु से इस सहायता का कोई संबंध गद्यांश में नहीं बताया गया।

चरण 3: निष्कर्ष निद्रा जागने की सहायक है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: सहायक किसकी है पूछे जाने पर पिछले वाक्य की मुख्य क्रिया और सर्वनाम का संबंध देखें।

1(iii). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : जागना जीवन के लिए आवश्यक है।

कारण : जाग्रत हो ध्यानपूर्वक कर्म करने से ही, व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति संभव है।

विकल्प :

[1 अंक]

- (A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।
- (B) कथन सही है, किंतु कारण गलत है।
- (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।
- (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

सही उत्तर: (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण वाले प्रश्न में दोनों की सत्यता तथा उनके बीच व्याख्यात्मक संबंध अलग-अलग जाँचना चाहिए।
- यहाँ जागना केवल आँखें खोलना नहीं, कर्मशील और जागरूक होना भी है।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचें गद्यांश जागने को जीवन का मुख्य लक्षण और जीवन तथा अभ्युदय का चिह्न कहता है। इसलिए जागना जीवन के लिए आवश्यक है वाला कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता जाँचें लेखक आदमी को कर्म करने के लिए जागने को कहता है और राष्ट्र की जागृति को जीवन की सक्रियता से जोड़ता है। इस आधार पर जागरूक होकर कर्म करने से व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र की उन्नति वाला कारण भी सही है।

चरण 3: व्याख्यात्मक संबंध तय करें कर्म और उन्नति की संभावना ही जागने की आवश्यकता स्पष्ट करती है। अतः कारण कथन की सही व्याख्या है। (A) दोनों को गलत और (B) कारण को गलत बताता है; (D) सही व्याख्या के संबंध को नकारता है। ये तीनों विकल्प असंगत हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: दोनों वाक्यों को सही मानने के बाद यह भी जाँचें कि कारण जागने की आवश्यकता क्यों स्पष्ट करता है।

1(iv). 'जागृति' और 'निद्रा' किसके प्रतीक हैं ? गद्यांश के आधार पर बताइए।

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक संबंधी प्रश्न में गद्यांश द्वारा दिए गए भावात्मक अर्थ को स्पष्ट करना चाहिए।
- लेखक की दृष्टि में जागृति सक्रियता और निद्रा निष्क्रियता से जुड़ी है।

चरण 1: जागृति का संकेत समझें गद्यांश में जागृति को जीवन और अभ्युदय का चिह्न कहा गया है। इसका भाव कर्मशीलता, चेतना और उन्नति है। जागकर कर्म करना जीवन की सक्रिय दिशा को प्रकट करता है।

चरण 2: निद्रा का संकेत समझें निद्रा को पतन तथा हास का चिह्न कहा गया है। यहाँ विशेष रूप से आवश्यकता से अधिक सोने और निष्क्रिय रहने की प्रवृत्ति का संकेत है। इसे केवल आवश्यक विश्राम की निंदा नहीं समझना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष जागृति जीवन और अभ्युदय अर्थात् उन्नति की प्रतीक है; निद्रा पतन तथा हास की प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: प्रतीकों का उत्तर देते समय गद्यांश के जीवन-अभ्युदय और पतन-हास वाले युग्म को आधार बनाएँ।

1(v). 'जागना' और 'सोना' दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे की पूरक कैसे हैं ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पूरक क्रियाएँ वे हैं जो एक-दूसरे को उपयोगी और संभव बनाती हैं।
- गद्यांश में जागना कर्म के लिए और सोना विश्राम के लिए आवश्यक माना गया है।

चरण 1: जागने की भूमिका स्पष्ट करें जागकर मनुष्य अपने कार्य करता है और जीवन में सक्रिय बना रहता है। लेखक जागने को जीवन का मुख्य लक्षण कहता है, क्योंकि कर्म और उन्नति के लिए जागरूकता चाहिए। लेकिन लगातार जागते रहना भी संतुलित जीवन का रूप नहीं है; गद्यांश नींद न आने को विकार बताता है।

चरण 2: सोने की सहायक भूमिका स्पष्ट करें सोना मनुष्य को विश्राम देता है। यह विश्राम उसे फिर जागकर कर्म करने के योग्य बनाए रखने में सहायता करता है। इस प्रकार निद्रा का उद्देश्य निरंतर निष्क्रिय रहना नहीं, कर्मशील जीवन को सहारा देना है। रात-दिन सोते रहना भी गद्यांश में निष्क्रियता कहा गया है।

चरण 3: दोनों का संतुलन जोड़ें जब मनुष्य कर्म के लिए जागता है और विश्राम के लिए सोता है, तब दोनों क्रियाएँ परस्पर सहायता करती हैं। एक सक्रिय जीवन चलाती है और दूसरी उस सक्रियता के लिए आवश्यक विश्राम देती है। यही उनके पूरक होने का अर्थ है।

चरण 4: निष्कर्ष जागना कर्म करने और सोना विश्राम पाने के लिए है। विश्राम फिर से कर्म करने की शक्ति देता है; इस संतुलन से दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे की पूरक बनकर जीवन को सुखी बनाती हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कर्म, विश्राम और फिर कर्म की परस्पर कड़ी स्पष्ट करें; केवल दोनों को आवश्यक कहकर न रुकें।

1(vi). लेखक के अनुसार 'किसी राष्ट्र की जागृति' का क्या तात्पर्य है ? उल्लेख कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राष्ट्र की जागृति का अर्थ सामूहिक चेतना और कर्मशीलता के संदर्भ में समझना है।
- गद्यांश में तमोगुण की अधिकता निष्क्रियता तथा जीवन-शक्ति की कमी का संकेत है।

चरण 1: लेखक द्वारा बताई स्थिति पहचानें गद्यांश के अंतिम वाक्य में राष्ट्र के विषय में जागृति की कामना का कारण बताया गया है। इसका बोध है कि वह राष्ट्र मात्रा से अधिक तमोगुणी हो गया है और उसमें जीवन की मात्रा जरूरत से कम है। यहाँ निद्रा का भाव सामूहिक निष्क्रियता से है।

चरण 2: जागृति का अभिप्राय खोलें ऐसे राष्ट्र में जागृति का तात्पर्य तमोगुण, आलस्य और निष्क्रियता से निकलकर चेतन तथा कर्मशील बनना है। जागृति को लेखक जीवन और अभ्युदय का चिह्न मानता है; इसलिए राष्ट्र की जागृति उसकी जीवन-शक्ति और उन्नति की दिशा में सक्रियता बढ़ाने का संकेत है।

चरण 3: अर्थ को गद्यांश तक सीमित रखें यह केवल लोगों के शारीरिक रूप से नींद से उठने की बात नहीं है। व्यक्ति के कर्म के लिए जागने की तरह राष्ट्र के स्तर पर भी जीवन की सक्रियता बढ़ाने की बात है। उत्तर में इसी भाव को राष्ट्र की उन्नति से जोड़ना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष किसी राष्ट्र की जागृति का अर्थ उसकी अत्यधिक तमोगुणी और निष्क्रिय अवस्था का अंत होकर उसमें चेतना, कर्मशीलता तथा जीवन-शक्ति का बढ़ना है, जिससे वह उन्नति की ओर बढ़े।

त्वरित सुझाव: अंतिम वाक्य की तमोगुण की अधिकता और जीवन की कमी को उलटकर जागृति का सकारात्मक अर्थ बताएँ।

1(vii). निद्रा को किस गुण की प्रधानता से जोड़ा गया है और क्यों ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गुण का नाम गद्यांश के प्रत्यक्ष कथन से और उसका कारण आसपास के विचारों से लेना चाहिए।
- निद्रा में तमोगुण की प्रधानता को लेखक निष्क्रियता और हास की चर्चा से जोड़ता है।

चरण 1: संबंधित गुण पहचानें गद्यांश में स्पष्ट कथन है कि निद्रा में तमोगुण की प्रधानता होती है। इसके विपरीत जागृति को रजोगुण-प्रधान बताया गया है। अतः यहाँ निद्रा को सतोगुण या रजोगुण से जोड़ना उचित नहीं होगा।

चरण 2: कारण स्पष्ट करें सोते समय मनुष्य जागृत अवस्था की तरह सक्रिय कर्म नहीं करता। विशेष रूप से आवश्यकता से अधिक सोते रहना उसे निष्क्रिय बनाता है। लेखक रात-दिन सोने वाले प्राणी को निष्क्रिय कहता है और निद्रा को पतन तथा हास का चिह्न बताता है। यही निष्क्रियता तमोगुण से संबंध का आधार है।

चरण 3: आवश्यक विश्राम से भेद समझें लेखक आरंभ में सोने को भी जरूरी मानता है और उसे जागने का सहायक बताता है। इसलिए उत्तर का आशय यह नहीं कि हर प्रकार का सोना हानिकारक है। तमोगुण की चर्चा में प्रमुख संकेत अत्यधिक निद्रा से उपजती जड़ता और कर्महीनता का है।

चरण 4: निष्कर्ष निद्रा को तमोगुण की प्रधानता से जोड़ा गया है, क्योंकि उसमें सक्रिय कर्म का अभाव रहता है और अधिक सोते रहने से निष्क्रियता, जड़ता तथा हास बढ़ते हैं।

त्वरित सुझाव: गुण का नाम बताने के बाद रात-दिन सोने की निष्क्रियता का संदर्भ देकर कारण स्पष्ट करें।

2. दुनिया का सबसे बड़ा अधम –

हाँ, हाँ, दुनिया का सबसे बड़ा अधम नर वही था
जिसकी ज़बान से यह निकला था पहले-पहल –
भूमि यह मेरी है !

“भूमि यह मेरी है ?”

झूठा, मक्कार था !

असत्य, अन्याय का अवतार था !

दुनिया का सबसे बड़ा अधम !!

नीचे की धरती और ऊपर का आसमान,

पानी और पवन –

प्रकृति की देन हैं ये जीवमात्र के लिए,

इन पर है सबका अधिकार;

सबका समान अधिकार

हवा को क्या बाँटोगे ?

पानी को बाँटोगे ?

बाँटोगे नीले आसमान को ?

बाँट भी सकोगे क्या ?

धरती बेचारी बेबस थी –

पैरों के नीचे

अचल पड़ी थी, निरीह;

कह दिया –

“भूमि यह मेरी है” –

बाँट लिया टुकड़ों में,

एक मुट्ठी लोगों ने,

मानो माता के आँचल को दाँतों से चीरकर

बाँट लिया कुछ शैतान बच्चों ने;

टुकुर-टुकुर ताकते रह गए शरीफ़

रोती रही दुखिया बेचारी माँ !

दुनिया का सबसे बड़ा अधम !

[8 अंक]

2(i). इस काव्यांश का केंद्रीय भाव है :

[1 अंक]

- (A) प्राकृतिक संसाधनों का सृजन
- (B) भूमि का वैज्ञानिक वितरण
- (C) भूमि पर सबका समान अधिकार
- (D) भूमि के इतिहास का वर्णन

सही उत्तर: (C) भूमि पर सबका समान अधिकार

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश की केंद्रीय भावना किसी एक घटना के विवरण से नहीं, उसके बार-बार उभरते विचार से पहचानी जाती है।
- कवि धरती, आकाश, पानी और पवन को प्रकृति की ऐसी देन मानता है जिस पर सभी जीवों का समान अधिकार है।

चरण 1: निर्णायक पंक्ति पहचानना कवि स्पष्ट कहता है, “इन पर है सबका अधिकार; सबका समान अधिकार। भूमि को कुछ लोगों द्वारा बाँट लेने की निंदा इसी समानता के विचार को पुष्ट करती है। इसलिए पूरे काव्यांश का केंद्र भूमि पर सबका साझा अधिकार है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) गलत है क्योंकि यहाँ संसाधनों के बनने की प्रक्रिया नहीं बताई गई है। (B) गलत है क्योंकि भूमि बाँटने की वैज्ञानिक विधि का वर्णन नहीं है; निजी कब्जे की आलोचना है। (D) गलत है क्योंकि यह भूमि का क्रमबद्ध इतिहास नहीं, अधिकार और न्याय संबंधी काव्यात्मक कथन है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का केंद्रीय भाव भूमि पर सबका समान अधिकार है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव चुनते समय “सबका समान अधिकार को भूमि-विभाजन की निंदा से जोड़ें।

2(ii). “प्रकृति की देन हैं ये जीवमात्र के लिए” इस पंक्ति से कवि का अभिप्राय है :

[1 अंक]

(A) व्यक्तिगत अधिकार

(B) जातीय विभाजन

(C) धार्मिक आस्था

(D) सामूहिक स्वामित्व

सही उत्तर: (D) सामूहिक स्वामित्व

हल:

अवधारणा:

- पंक्ति का आशय समझने के लिए उसके मुख्य शब्द और आसपास की पंक्तियाँ साथ पढ़ी जाती हैं।
- यहाँ “जीवमात्र किसी एक व्यक्ति, जाति या धर्म के स्थान पर सभी जीवों को समेटता है।

चरण 1: जीवमात्र का अर्थ समझना “प्रकृति की देन हैं ये जीवमात्र के लिए में धरती, आसमान, पानी और पवन पर सभी का अधिकार स्वीकार किया गया है। अगली पंक्ति का “सबका समान अधिकार इसी साझे अधिकार को स्पष्ट करता है।

चरण 2: विकल्पों का मिलान (D) का सामूहिक स्वामित्व इस साझे अधिकार को व्यक्त करता है। (A) का व्यक्तिगत अधिकार कवि की भावना के विपरीत है। (B) का जातीय विभाजन सभी जीवों की समानता को सीमित कर देता है। (C) धार्मिक आस्था की चर्चा नहीं है; यहाँ प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग और अधिकार की बात है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का अभिप्राय प्राकृतिक देनों पर सामूहिक स्वामित्व अर्थात् सभी का समान अधिकार है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: “जीवमात्र के व्यापक अर्थ और “सबका समान अधिकार के आधार पर विकल्प चुनें।

2(iii). “माता के आँचल को दाँतों से चीरना” इस पंक्ति का आज के संदर्भ में सटीक अर्थ क्या है ?

[1 अंक]

- (A) जैविक खेती को प्रोत्साहन
- (B) वनों की अंधाधुंध कटाई
- (C) हरित ऊर्जा का विकास
- (D) जल संरक्षण योजनाएँ

सही उत्तर: (B) वनों की अंधाधुंध कटाई

हल:

अवधारणा:

- काव्य-बिंब के संदर्भगत अर्थ में उसके भाव को दिए गए विकल्पों की गतिविधियों से मिलाया जाता है।
- माता का आँचल धरती की पोषणकारी संपदा का बिंब है; उसे चीरना निर्दय शोषण का संकेत है।

चरण 1: बिंब का भाव समझना कवि भूमि को माँ और उसका बँटवारा करने वालों को शैतान बच्चे कहता है। “दाँतों से चीरकर में स्वार्थ, हिंसा और प्रकृति को क्षति पहुँचाने का भाव है। आज के संदर्भ में यह प्राकृतिक संपदा के विनाशकारी दोहन से जुड़ता है।

चरण 2: दिए गए विकल्पों की जाँच (B) वनों की अंधाधुंध कटाई धरती की हरियाली और पोषणकारी संपदा को निर्दयता से नष्ट करती है, इसलिए बिंब से मेल खाती है। (A) जैविक खेती, (C) हरित ऊर्जा और (D) जल संरक्षण प्रकृति की रक्षा या टिकाऊ उपयोग की गतिविधियाँ हैं; वे आँचल चीरने के विनाशकारी भाव के विपरीत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष दिए गए विकल्पों में इस बिंब का सटीक समकालीन अर्थ वनों की अंधाधुंध कटाई है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: बिंब में छिपे विनाश के भाव को देखें; संरक्षण वाली गतिविधियाँ इस अर्थ में नहीं आएँगी।

2(iv). यदि ‘भूमि यह मेरी है’ की भावना समाज में व्याप्त नहीं होगी तो दुनिया की संरचना कैसी होगी ?

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में दी गई संभावना का उत्तर काव्यांश के मूल मूल्य, समान अधिकार, के आधार पर देना है।
- निजी कब्जे की भावना के अभाव को संसाधनों के न्यायपूर्ण साझे उपयोग से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: वर्तमान अन्याय पहचानना काव्यांश में एक मुट्ठी लोगों द्वारा धरती को टुकड़ों में बाँटना अन्याय का रूप है। “भूमि यह मेरी है का आग्रह सामूहिक अधिकार छीनकर कुछ लोगों को स्वामी बना देता है। कवि इसी स्वार्थ की आलोचना करता है।

चरण 2: संभावित समाज स्पष्ट करना यह भावना न होने पर भूमि पर सभी का समान अधिकार स्वीकार किया जाएगा। संसाधनों पर मुट्ठी भर लोगों के कब्जे के बजाय उनका न्यायपूर्ण उपयोग होगा। समाज में स्वार्थपूर्ण विभाजन और शोषण घटेंगे तथा समानता, सहयोग और भाईचारे को बढ़ावा मिलेगा।

चरण 3: निष्कर्ष दुनिया की संरचना अधिक समतामूलक, न्यायपूर्ण और सहयोगी होगी; भूमि तथा प्राकृतिक संसाधनों पर सभी का समान अधिकार माना जाएगा।

त्वरित सुझाव: उत्तर में निजी कब्जे के अभाव का परिणाम समान अधिकार और सहयोग के रूप में स्पष्ट करें।

2(v). 'दुनिया का सबसे बड़ा अधम' किसे कहा गया है और क्यों ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में प्रयुक्त कठोर संबोधन का उत्तर उसकी पहचान और कवि द्वारा बताए गए कारण, दोनों से पूरा होता है।
- प्राकृतिक संसाधन सभी जीवों के लिए हैं; उन पर एकाधिकार का दावा इसी नैतिक आधार पर अन्याय कहा गया है।

चरण 1: अधम कहे गए व्यक्ति की पहचान कवि ने उस व्यक्ति को “दुनिया का सबसे बड़ा अधम कहा है जिसने सबसे पहले “भूमि यह मेरी है कहकर धरती पर अपना व्यक्तिगत अधिकार जताया। यह पहचान काव्यांश की आरंभिक पंक्तियों में स्पष्ट है। किसी जाति, पेशे या विशिष्ट ऐतिहासिक व्यक्ति का नाम यहाँ नहीं दिया गया है।

चरण 2: निंदा का कारण स्पष्ट करना धरती प्रकृति की देन है और समस्त जीवों के लिए है। उस पर निजी स्वामित्व जताने से सबका समान अधिकार छिनता है तथा कुछ लोगों के कब्जे और अन्यायपूर्ण विभाजन का रास्ता खुलता है। कवि इस स्वार्थ को माँ के आँचल को चीरने जैसा निर्दय कार्य मानता है। इसलिए वह उस पहले दावेदार को झूठा, मक्कार और अन्याय का अवतार कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष सबसे पहले धरती को अपनी संपत्ति बताने वाला व्यक्ति अधम कहा गया है, क्योंकि उसने सबकी साझी प्राकृतिक देन पर एकाधिकार जताकर असमानता, स्वार्थ और अन्याय की शुरुआत की।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो पक्ष रखें: पहले निजी स्वामित्व जताने वाले की पहचान, फिर समान अधिकार छीनने का कारण।

2(vi). 'टुकुर-टुकुर ताकते रह गए शरीफ' पंक्ति में किन लोगों पर व्यंग्य किया गया है और क्यों ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यंग्य में कथित प्रशंसा के भीतर छिपी आलोचना समझनी होती है; यहाँ “शरीफ शब्द निष्क्रिय लोगों की ओर संकेत करता है।
- काव्यांश में अन्याय करने वालों के साथ उसे चुपचाप देखने वालों की भूमिका पर भी प्रश्न उठता है।

चरण 1: व्यंग्य के पात्र पहचानना “टुकुर-टुकुर ताकते रह गए शरीफ में उन तथाकथित भले और शरीफ लोगों पर व्यंग्य है जो कुछ स्वार्थी लोगों को धरती के टुकड़े बाँटते देखते रहे। उन्होंने स्वयं इस कृत्य में भाग लिया हो, ऐसा कथन नहीं है; आलोचना उनके मूकदर्शक बने रहने की है।

चरण 2: व्यंग्य का कारण बताना जब मुट्ठी भर लोगों ने सबकी साझी भूमि पर अधिकार किया, तब इन लोगों ने न उस अन्याय का प्रतिरोध किया, न धरती और समान अधिकार की रक्षा के लिए आवाज़ उठाई। उनकी शराफ़त कर्महीनता बन गई। इस निष्क्रियता के कारण अन्याय करने वालों को रोकने वाला कोई नहीं रहा और बेबस धरती का शोषण होता रहा। कवि दिखाता है कि केवल भला कहलाना पर्याप्त नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष व्यंग्य उन निष्क्रिय तथाकथित शरीफ लोगों पर है जो भूमि के अन्यायपूर्ण बँटवारे का विरोध करने के बजाय मूकदर्शक बने रहे और इस तरह अन्याय को बढ़ने दिया।

त्वरित सुझाव: “शरीफ को केवल प्रशंसा न समझें; “ताकते रह गए से प्रकट निष्क्रियता और मौन पर ध्यान दें।

3(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए उल्लेख कीजिए कि अभिव्यक्ति के अधिकार में लेखन किस प्रकार सहायक है ?

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अप्रत्याशित विषय का कोई बँधा-बँधाया उत्तर नहीं होता; लेखक अपने अनुभव, कल्पना और स्वतंत्र दृष्टि से उसका विकास करता है।
- अभिव्यक्ति का अधिकार अपने विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता देता है; लेखन इस स्वतंत्रता को सुविचारित और स्थायी रूप देता है।

चरण 1: विषय का अर्थ और उत्तर की योजना पहले नए तथा अप्रत्याशित विषयों को रटे हुए विषयों से अलग स्पष्ट करना चाहिए। ऐसा विषय अचानक सामने आ सकता है और साधारण वस्तु, अनुभव या स्थिति से भी जुड़ सकता है। उत्तर में मौलिक दृष्टि, कल्पना और अनुभव की भूमिका बताकर उसे विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता से जोड़ना चाहिए। अंत में लेखन से मिलने वाले आत्मविश्वास तथा विचारों की स्पष्टता का उल्लेख उपयुक्त होगा। केवल विषय का अनोखा होना पर्याप्त नहीं है; उसे देखने का लेखक का अपना तरीका भी आवश्यक है। स्वतंत्रता का अर्थ यहाँ दूसरों की नकल किए बिना अपनी बात सोचकर रखना है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन का अर्थ है ऐसे विषयों पर मौलिक ढंग से लिखना, जिनकी पहले से तैयारी न हो। इसमें लेखक अपने अनुभव, कल्पना और चिंतन के आधार पर विषय को नया रूप देता है। लेखन व्यक्ति को अपनी अनुभूतियाँ, विचार और असहमतियाँ स्पष्ट तथा तर्कपूर्ण ढंग से व्यक्त करने का अवसर देता है। इससे झिझक दूर होती है, स्वतंत्र सोच विकसित होती है और आत्मविश्वास बढ़ता है। इस प्रकार लेखन अभिव्यक्ति के अधिकार को व्यवहार में सार्थक बनाने का सशक्त माध्यम है।

चरण 3: निष्कर्ष अप्रत्याशित विषय पर लेखन मौलिक चिंतन का अभ्यास है, जो अपने विचारों को निर्भीक, स्पष्ट और सुसंगत ढंग से प्रस्तुत करने में सहायक होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को दो हिस्सों में रखें: पहले अप्रत्याशित लेखन का अर्थ, फिर स्वतंत्र अभिव्यक्ति में उसकी भूमिका स्पष्ट करें।

3(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी मुख्यतः वर्णन से आगे बढ़ती है, जबकि नाटक में घटनाएँ पात्रों के संवाद और अभिनय द्वारा दर्शकों के सामने घटित होती हैं।
- नाट्य रूपांतरण में मूल कथ्य की रक्षा के साथ रंगमंच की दृश्यात्मकता, समय और प्रस्तुति की सीमाओं का ध्यान रखना आवश्यक है।

चरण 1: रूपांतरण के मुख्य बिंदु चुनना उत्तर में पहले कहानी के मूल भाव और घटनाक्रम को बनाए रखने की आवश्यकता बताएँ। फिर घटनाओं को मंच पर दिखाने योग्य दृश्यों में बाँटने, पात्रानुकूल संवाद रचने और वर्णन को क्रिया में बदलने की चर्चा करें। कहानी में लेखक पात्र की मनःस्थिति सीधे बता सकता है; नाटक में उसे संवाद, हावभाव या उपयुक्त एकालाप से प्रकट करना पड़ता है। इसलिए केवल कहानी के वाक्य पात्रों में बाँट देना नाट्य रूपांतरण नहीं है। कथानक का संघर्ष और चरमबिंदु भी मंचीय रूप में प्रभावी बने रहने चाहिए।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय उसके मूल कथ्य, भाव और उद्देश्य को सुरक्षित रखना चाहिए। कथानक को मंचीय दृश्यों में बाँटकर अनावश्यक वर्णन हटाना चाहिए। पात्रों की संख्या तथा घटनाओं का चयन मंच की सीमाओं के अनुरूप हो। संवाद संक्षिप्त, स्वाभाविक, पात्रानुकूल और कथानक को आगे बढ़ाने वाले हों। पात्रों के मनोभाव अभिनय, संवाद या एकालाप से व्यक्त किए जाएँ। देशकाल, वेशभूषा, प्रकाश, ध्वनि और मंच-सज्जा के संकेत स्पष्ट हों। घटनाओं की निरंतरता और नाटकीय संघर्ष बनाए रखते हुए प्रस्तुति को रोचक तथा प्रभावपूर्ण बनाना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष सफल नाट्य रूपांतरण मूल कहानी के भाव को बचाते हुए उसे संवाद, अभिनय और मंचीय दृश्यों के माध्यम से प्रभावी

बनाता है।

त्वरित सुझाव: कहानी से नाटक की ओर जाते समय कथ्य, दृश्य-विभाजन, संवाद, अभिनय और मंच-संकेत के बिंदु क्रम से याद करें।

3(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

रेडियो नाटकों में संवादों पर विशेष ध्यान देना क्यों आवश्यक है ? तर्क सहित लिखिए।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; श्रोता पात्रों, दृश्य और घटनाओं को देख नहीं सकता।
- संवाद कथानक, चरित्र, परिवेश और भावों को सुनने योग्य रूप में प्रस्तुत करते हैं।

चरण 1: माध्यम की सीमा और संवादों की भूमिका समझिए रेडियो में मंच, वेशभूषा, चेहरे की भावभंगिमा या दृश्य अभिनय दिखाई नहीं देता। इसलिए संवादों से ही स्पष्ट होना चाहिए कि कौन बोल रहा है, घटना कहाँ घट रही है और पात्रों के बीच क्या संबंध है। संवाद कथा को स्वाभाविक ढंग से आगे बढ़ाएँ; वे केवल सूचना की सूची न बनें। पात्रों की आयु, शिक्षा और सामाजिक पृष्ठभूमि के अनुसार उनकी भाषा भिन्न रखी जाती है, ताकि श्रोता आवाज़ और बोलने के ढंग से उन्हें पहचान सके। एक ही बात को अनावश्यक रूप से दोहराने से गति धीमी पड़ती है। साथ ही, दृश्य-सूचना को संवाद में इस तरह पिरोना चाहिए कि बातचीत बनावटी न लगे। किसी पात्र का दूसरे से दरवाज़ा खोलने के लिए कहना और फिर दरवाज़े की आवाज़ सुनाई देना परिवेश स्पष्ट कर सकता है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर रेडियो नाटक पूर्णतः श्रव्य माध्यम है। इसमें दर्शनीय मंच, वेशभूषा और हावभाव उपलब्ध नहीं होते; इसलिए संवाद ही पात्रों का परिचय, उनका स्वभाव, पारस्परिक संबंध, घटनास्थल और कथानक स्पष्ट करते हैं। शब्दों, स्वर के उतार-चढ़ाव तथा विराम से भाव और तनाव व्यक्त होते हैं। ध्वनि-प्रभावों के साथ संवाद श्रोता के मन में दृश्य रचते हैं। अतः संवाद सरल, स्वाभाविक, पात्रानुकूल और स्पष्ट होने चाहिए। लंबे, जटिल या अस्पष्ट संवाद श्रोता को उलझाकर नाटक का प्रभाव घटा देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष संवाद रेडियो नाटक की कथा, चरित्र और दृश्य-जगत को श्रोता तक पहुँचाने का प्रमुख साधन हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दृश्य के अभाव को संवादों की भूमिका से जोड़िए और भाषा तथा स्वर दोनों की चर्चा कीजिए।

4(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘रेडियो ध्वनि, स्वर व शब्दों का खेल है’ – कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो में अर्थ ग्रहण करने का आधार सुनना है; दृश्य-संकेत उपलब्ध नहीं होते।
- ध्वनि-प्रभाव वातावरण, स्वर भाव और शब्द स्पष्ट सूचना प्रदान करते हैं।

चरण 1: तीनों साधनों का योगदान पहचानिए ध्वनि से परिवेश की पहचान होती है, जैसे वर्षा या कदमों की आहट। वक्ता का स्वर उत्साह, भय या उदासी प्रकट करता है। शब्द घटना का स्पष्ट विवरण देते हैं। इनका संयोजन श्रोता की कल्पना को सक्रिय करता है। जैसे बारिश की आवाज़ से बरसात का वातावरण और काँपते स्वर से भय का बोध हो सकता है। शब्द बताते हैं कि उस परिस्थिति में पात्र क्या कह रहा है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर रेडियो में दृश्य नहीं होते। ध्वनि-प्रभाव वातावरण रचते हैं, स्वर का उतार-चढ़ाव भाव व्यक्त करता है और शब्द सूचना तथा घटनाएँ स्पष्ट करते हैं। इनके संयोजन से श्रोता के मन में दृश्य बनते हैं; इसलिए रेडियो को ध्वनि, स्वर और शब्दों का खेल कहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो की प्रभावशीलता ध्वनि, स्वर और शब्दों के सामंजस्य पर निर्भर करती है।

त्वरित सुझाव: ध्वनि को वातावरण, स्वर को भाव और शब्दों को सूचना से जोड़कर उत्तर व्यवस्थित कीजिए।

4(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘एंकर विजुअल’ का क्या अभिप्राय है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन समाचार में एंकर के कथन और घटना के दृश्य का संयोजन सूचना को स्पष्ट करता है।
- एंकर विजुअल में एंकर का समाचार-वाचन संबंधित दृश्यों के साथ चलता है।

चरण 1: प्रस्तुति की प्रक्रिया समझिए एंकर समाचार का परिचय देता है। संबंधित दृश्य उपलब्ध होने पर उन्हें दिखाया जाता है और एंकर की आवाज़ में समाचार का विवरण चलता रहता है। दृश्य खबर को प्रत्यक्ष आधार देते हैं। इसे केवल कैमरे पर एंकर का बोलना समझना उचित नहीं है। उदाहरण के लिए, बाढ़ की खबर में पानी से घिरी बस्ती के दृश्य दिखते समय एंकर प्रभावित क्षेत्र की स्थिति बताता रह सकता है। दृश्य और कथन में तालमेल होना आवश्यक है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर एंकर विजुअल टेलीविजन समाचार की वह प्रस्तुति है जिसमें एंकर समाचार बताता है और साथ ही उससे संबंधित दृश्य दिखाए जाते हैं। दृश्य आने पर भी एंकर की आवाज़ सुनाई देती रहती है। इससे समाचार अधिक स्पष्ट, विश्वसनीय और प्रभावशाली बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष एंकर की आवाज़ और समाचार-संबंधी दृश्यों का संयुक्त प्रयोग एंकर विजुअल है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में एंकर की चलती आवाज़ और खबर के संबंधित दृश्य दोनों का उल्लेख अवश्य कीजिए।

4(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘नेट साउंड’ किसे कहते हैं ? दूरदर्शन के संदर्भ में समझाइए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दूरदर्शन समाचार में दृश्य के साथ सुनाई देने वाली घटनास्थल की स्वाभाविक ध्वनियाँ समाचार को जीवंत और प्रामाणिक बनाती हैं। इन्हीं को ‘नेट साउंड’ कहा जाता है।
- समाचारवाचक या संवाददाता की टिप्पणी और घटनास्थल की मूल ध्वनि में अंतर समझना इस प्रश्न का आधार है।

चरण 1: शब्द का अर्थ समझना ‘नेट साउंड’ से आशय प्राकृतिक अथवा स्वाभाविक ध्वनि से है। किसी घटना का वीडियो रिकॉर्ड करते समय घटनास्थल पर उपस्थित लोगों, गतिविधियों और वातावरण की जो मूल आवाज़ें रिकॉर्ड होती हैं, वे इसके अंतर्गत आती हैं।

चरण 2: दूरदर्शन में उसकी भूमिका स्पष्ट करना उदाहरण के लिए, सभा की तालियाँ, भीड़ के नारे या वर्षा की आवाज़ दृश्य को वास्तविक वातावरण देती है। ऐसी ध्वनि समाचार को केवल कथन तक सीमित नहीं रहने देती; दर्शक घटना का परिवेश भी अनुभव करता है। इसे बाद में जोड़े गए पार्श्व-संगीत या संवाददाता के विवरण से अलग पहचानना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष दूरदर्शन समाचार में घटनास्थल पर रिकॉर्ड हुई स्वाभाविक ध्वनियाँ ‘नेट साउंड’ कहलाती हैं। जैसे भीड़ के नारे, तालियाँ या वर्षा की आवाज़। ये दृश्य के वास्तविक वातावरण को दर्शक तक पहुँचाती हैं और समाचार की जीवंतता तथा प्रामाणिकता बढ़ाती हैं।

त्वरित सुझाव: ‘नेट साउंड’ का उत्तर लिखते समय पहले स्वाभाविक ध्वनि की परिभाषा, फिर घटनास्थल का एक उदाहरण और उसका प्रभाव बताइए।

4(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

एक सफल साक्षात्कारकर्ता में साक्षात्कार हेतु कौन-सी विशेषताएँ होना आवश्यक है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- साक्षात्कार उद्देश्यपूर्ण संवाद है। इसकी सफलता साक्षात्कारकर्ता की तैयारी, प्रश्न पूछने की कुशलता और सामने वाले के उत्तर ध्यान से सुनने पर निर्भर करती है।
- विषय का ज्ञान और विनम्र व्यवहार मिलकर बातचीत को सार्थक बनाते हैं; केवल प्रश्नों की सूची तैयार करना पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: तैयारी और विषयज्ञान साक्षात्कारकर्ता को साक्षात्कार के उद्देश्य, विषय और संबंधित व्यक्ति के कार्य तथा पृष्ठभूमि का ज्ञान होना चाहिए। उसे स्पष्ट, संक्षिप्त और प्रासंगिक प्रश्न तैयार करने चाहिए ताकि बातचीत सही दिशा में आगे बढ़ सके।

चरण 2: संवाद की व्यावहारिक कुशलता धैर्यपूर्वक सुनना, आत्मविश्वास से बात करना और निष्पक्ष रहना आवश्यक है। उत्तर में कोई महत्वपूर्ण बात उभरे तो वह उसके आधार पर पूरक प्रश्न पूछ सके। संवेदनशील और विनम्र व्यवहार सामने वाले को सहज बनाता है; अनावश्यक हस्तक्षेप या निजी आग्रह संवाद को बाधित करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सफल साक्षात्कारकर्ता को विषय और संबंधित व्यक्ति की पूरी जानकारी होनी चाहिए। उसमें स्पष्ट प्रश्न पूछने की कुशलता, आत्मविश्वास, धैर्य, विनम्रता और निष्पक्षता आवश्यक हैं। वह उत्तर ध्यानपूर्वक सुने, सामने वाले को सहज बनाए तथा अवसरानुकूल पूरक प्रश्न पूछ सके।

त्वरित सुझाव: विशेषताओं को तैयारी, प्रश्न-कौशल और व्यवहार के क्रम में रखिए; ध्यान से सुनना तथा पूरक प्रश्न पूछना अवश्य शामिल करें।

4(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

विशेष लेखन की भाषा शैली कैसी होती है ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेष लेखन किसी विशिष्ट क्षेत्र, जैसे विज्ञान, अर्थव्यवस्था या खेल की जानकारी पाठकों तक पहुँचाता है। इसलिए इसमें विषय की शुद्धता और पाठक की समझ दोनों आवश्यक हैं।
- विषय-विशेष की पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग होता है, किंतु कठिन शब्दों को समझाकर लेखन को बोधगम्य बनाया जाता है।

चरण 1: भाषा की विशेषता पहचानना विशेष लेखन की भाषा विषयानुकूल, स्पष्ट, सटीक और सरल होनी चाहिए। किसी क्षेत्र की तकनीकी या पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग आवश्यक हो सकता है, पर उसका अर्थ सामान्य पाठक के लिए स्पष्ट करना चाहिए। अस्पष्ट और अनावश्यक रूप से जटिल अभिव्यक्ति से बचना उचित है।

चरण 2: प्रस्तुति की शैली समझना इसमें तथ्य, आँकड़े और उदाहरण विषय को प्रामाणिक तथा रोचक बनाते हैं। विश्लेषण का क्रम ऐसा होना चाहिए कि सामान्य पाठक भी विशेषज्ञता वाले विषय को समझ सके। इसलिए भाषा में गंभीरता के साथ सहजता और शैली में व्याख्या तथा विश्लेषण का संतुलन आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष विशेष लेखन की भाषा विषयानुकूल, स्पष्ट, सटीक और सहज होती है। इसमें पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग करते हुए कठिन शब्दों को समझाया जाता है। शैली तथ्यपरक, व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक होती है; उदाहरण तथा आँकड़े विषय को सामान्य पाठक के लिए बोधगम्य बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में विषय-विशेष की शब्दावली और सामान्य पाठक की समझ, दोनों का उल्लेख करें; केवल 'सरल भाषा' लिखकर न छोड़ें।

5(i). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

स्वच्छता : आज की आवश्यकता

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा अनुभव, विचार और संवेदना सरल तथा प्रभावशाली भाषा में प्रस्तुत किए जाते हैं।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में भूमिका, विषय का विकास और सार्थक समापन रखा जाता है।

चरण 1: लेख की रूपरेखा और प्रारूप ऊपर विषयानुकूल शीर्षक लिखें। आरंभ किसी परिचित दृश्य से करें, जिससे पाठक का ध्यान आकर्षित हो। इसके बाद स्वच्छता से जुड़े विचार क्रमबद्ध ढंग से रखें। रचनात्मक लेख के लिए पत्र जैसा पता या संबोधन आवश्यक नहीं है।

चरण 2: विचारों का क्रम और भाषा स्वच्छता को स्वास्थ्य और नागरिक जिम्मेदारी से जोड़ें। समस्या बताने के बाद कचरे के पृथक्करण, प्लास्टिक के कम उपयोग तथा दैनिक व्यवहार में बदलाव जैसे ठोस उपाय दें। अंतिम वाक्य सामूहिक संकल्प प्रकट करें। छोटे वाक्य और सहज शब्द लेख को स्पष्ट बनाते हैं। अनावश्यक विस्तार से बचते हुए विचारों में निरंतरता बनाए रखें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख स्वच्छता : आज की आवश्यकता

सुबह विद्यालय जाते समय सड़क के किनारे जमा कूड़ा देखकर मन उदास हो जाता है। जिस धरती को हम माँ कहते हैं, उसे गंदा करने में संकोच क्यों नहीं करते? स्वच्छता केवल सुंदरता का प्रश्न नहीं, स्वस्थ जीवन की पहली शर्त है। खुले में पड़ा कचरा मच्छियों, मच्छरों और बीमारियों को आमंत्रित करता है। सफाईकर्मी अकेले पूरे समाज को स्वच्छ नहीं रख सकते। हमें घर का गीला और सूखा कचरा अलग करना चाहिए, सार्वजनिक स्थानों पर कूड़ा नहीं फेंकना चाहिए और प्लास्टिक का उपयोग घटाना चाहिए। विद्यालय और मोहल्ले में नियमित सफाई अभियान भी उपयोगी हैं। लेकिन अभियान से अधिक आवश्यक है रोज की आदत। जब हर नागरिक अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाएगा, तभी स्वच्छ और स्वस्थ भारत का सपना सच होगा।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत आदर्श लेख में “स्वच्छता : आज की आवश्यकता” विषय को अनुभव, विचार और व्यावहारिक संदेश के साथ लगभग 120 शब्दों में व्यक्त किया गया है।

त्वरित सुझाव: पहले एक प्रभावी शुरुआती दृश्य और अंतिम संदेश तय करें; फिर बीच में समस्या, कारण तथा उपाय जोड़कर शब्द-सीमा जाँचें।

5(ii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

प्रकृति से टूटता नाता

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा अनुभव, विचार और संवेदना सरल तथा प्रभावशाली भाषा में प्रस्तुत किए जाते हैं।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में भूमिका, विषय का विकास और सार्थक समापन रखा जाता है।

चरण 1: लेख की रूपरेखा और प्रारूप ऊपर विषयानुकूल शीर्षक लिखें। आरंभ किसी परिचित दृश्य से करें, जिससे पाठक का ध्यान आकर्षित हो। इसके बाद प्रकृति से मनुष्य का संबंध से जुड़े विचार क्रमबद्ध ढंग से रखें। रचनात्मक लेख के लिए पत्र जैसा पता या संबोधन आवश्यक नहीं है।

चरण 2: विचारों का क्रम और भाषा अतीत के सहज प्राकृतिक परिवेश और वर्तमान जीवन का दृश्य सामने रखें। दूरी के कारणों तथा उनके परिणामों का उल्लेख करें। पौधों की देखभाल, जल संरक्षण और खुले वातावरण से जुड़ने जैसे उपायों के साथ आशापूर्ण अंत करें। छोटे वाक्य और सहज शब्द लेख को स्पष्ट बनाते हैं। अनावश्यक विस्तार से बचते हुए विचारों में निरंतरता बनाए रखें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख प्रकृति से टूटता नाता

कभी सुबह चिड़ियों की चहचहाहट से खुलती थी, आज मोबाइल की घंटी से खुलती है। ऊँची इमारतों और बंद कमरों के बीच हमारा प्रकृति

से नाता कमजोर होता जा रहा है। पेड़ों की छाया, मिट्टी की सुगंध और नदी की कलकल अब अनेक बच्चों के लिए केवल किताबों की बातें हैं। सुविधा की अंधी दौड़ में हमने जंगल काटे, नदियाँ दूषित कीं और हवा को धुएँ से भर दिया। इसका परिणाम बढ़ती गर्मी और अस्वस्थ जीवन के रूप में सामने है। संबंध जोड़ने की शुरुआत छोटे कदमों से हो सकती है। पौधे लगाएँ, उनकी देखभाल करें, पानी बचाएँ और प्रतिदिन कुछ समय खुले वातावरण में बिताएँ। प्रकृति हमारे मनोरंजन की वस्तु नहीं, जीवन का आधार है। उससे जुड़ना वास्तव में अपने भविष्य को बचाना है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत आदर्श लेख में “प्रकृति से टूटता नाता विषय को अनुभव, विचार और व्यावहारिक संदेश के साथ लगभग 120 शब्दों में व्यक्त किया गया है।

त्वरित सुझाव: पहले एक प्रभावी शुरुआती दृश्य और अंतिम संदेश तय करें; फिर बीच में समस्या, कारण तथा उपाय जोड़कर शब्द-सीमा जाँचें।

5(iii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

मोबाइल में कैद जीवन

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ी किसी परिचित स्थिति को संवेदनापूर्ण भाषा, मौलिक दृष्टि और प्रभावी बिंबों के साथ प्रस्तुत किया जाता है।
- इस विषय का केंद्र मोबाइल का उपयोग नहीं, बल्कि उसमें सिमटते संबंध, समय और वास्तविक अनुभव हैं। लगभग 120 शब्दों में दृश्य, समस्या और सकारात्मक दिशा को जोड़ना चाहिए।

चरण 1: रूपरेखा और आरंभ तय करना शीर्षक के बाद घर का एक छोटा दृश्य लिया जा सकता है जिसमें सभी सदस्य साथ होकर भी अपनी स्क्रीन में खोए हों। इससे विषय बिना लंबे उपदेश के स्पष्ट होता है। फिर मोबाइल की उपयोगिता स्वीकार करते हुए उसके अत्यधिक प्रयोग से होने वाली दूरी को दिखाएँ। अंत में उपकरण पर अपने नियंत्रण की बात रखें।

चरण 2: विचारों और भाषा का संयोजन स्क्रीन, खिड़की और कैद जैसे बिंब शीर्षक के आशय को सजीव बनाते हैं। विचार क्रम घर के दृश्य से डिजिटल सुविधाओं तक और वहाँ से संबंधों की उपेक्षा तथा समाधान तक जाता है। भाषा सहज रखें; केवल लाभ और हानि की सूची बनाने के स्थान पर जीवन का अनुभव उभारें। निम्न मॉडल लेख का मुख्य भाग लगभग 120 शब्दों का है।

चरण 3: पूर्ण मॉडल लेख मोबाइल में कैद जीवन

सुबह आँख खुलते ही खिड़की से पहले मोबाइल की स्क्रीन खुलती है। संदेशों की घंटियाँ हमें बुलाती हैं और पास बैठी माँ की आवाज़ अनसुनी रह जाती है। एक दिन भोजन की मेज़ पर देखा, परिवार साथ था, पर सबकी निगाहें अलग-अलग स्क्रीन में थीं। कितना विचित्र है कि दूर के लोगों से जुड़ते हुए हम अपनों से दूर हो रहे हैं! मोबाइल ने पढ़ाई, बातचीत और काम आसान किए हैं, लेकिन हर खाली क्षण उसे सौंप देना जीवन को छोटा कर देता है। मैदान की धूप, मित्र की हँसी और पेड़ की छाया किसी स्क्रीन में पूरी नहीं समा सकती। हमें रोज़ कुछ समय मोबाइल से मुक्त रखना चाहिए। उपकरण हमारी सुविधा बने, हमारे समय और संबंधों का मालिक नहीं।

चरण 4: निष्कर्ष लेख में पारिवारिक दृश्य, मोबाइल की उपयोगिता, संबंधों पर उसका प्रभाव और संतुलित उपयोग का संदेश रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत हुआ है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक के किसी शब्द को बिंब बनाइए और रोज़मर्रा के एक दृश्य से लेख आरंभ करके उसी विषय पर सार्थक अंत कीजिए।

6(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘आत्मपरिचय’ का कवि अपने किस सीखे हुए ज्ञान को भूलना चाहता है और क्यों ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंशराय बच्चन की कविता में कवि का व्यक्तिगत प्रेममय जीवन संसार की रूढ़ धारणाओं और व्यावहारिक चतुराई से अलग दिखाई देता है।
- यहाँ ज्ञान को भूलना शिक्षा का तिरस्कार नहीं है; यह प्रेम और सहजता को बाधित करने वाली सांसारिक समझ से मुक्त होने की इच्छा है।

चरण 1: काव्य-संदर्भ पहचानना कवि जगत में होने पर भी जगत के ढंग से नहीं चलना चाहता। उसकी अनुभूति का आधार प्रेम है। संसार जिसे समझदारी मानता है, उसमें स्वार्थ, लाभ की गणना और व्यवहार की जटिलताएँ शामिल हो सकती हैं। इसलिए वह अपने सीखे हुए सांसारिक ज्ञान को छोड़ने की बात करता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कवि संसार की स्वार्थपूर्ण चतुराई और व्यवहार-कुशलता का सीखा हुआ ज्ञान भूलना चाहता है। यह ज्ञान मनुष्य को प्रेम और सहजता से दूर करता है। कवि इसके स्थान पर निष्कपट प्रेम, मस्ती और हृदय की स्वतंत्र अनुभूति के साथ जीना चाहता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि प्रेम और सहज जीवन के विरोधी सांसारिक ज्ञान को भूलना चाहता है, क्योंकि उसकी प्राथमिकता निष्कपट हृदय और आत्मीयता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले ज्ञान का स्वरूप स्पष्ट करें, फिर प्रेम और सहजता से जोड़कर उसे भूलने का कारण लिखें।

6(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘पतंग’ कविता के माध्यम से कवि ने किसकी ओर संकेत किया है और क्यों ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलोक धन्वा की कविता पतंग में बच्चों की चंचलता, कल्पना, उत्साह और साहस को पतंग उड़ाने के अनुभव से व्यक्त किया गया है।
- पतंग का ऊँचा उठना बालमन की मुक्त उड़ान का संकेत है; खेल में डूबे बच्चे भय पर विजय पाकर अपने संसार का विस्तार करते हैं।

चरण 1: बिंबों का आशय समझना कविता में पतंग उड़ाते बच्चे छतों पर दौड़ते हैं और आकाश से जुड़ जाते हैं। गिरने की आशंका भी उनके उत्साह को रोक नहीं पाती। बच्चों के शरीर का लचीलापन, हलकापन और बार-बार खेल में लौटना जीवन की ऊर्जा को व्यक्त करता है। इसलिए पतंग को केवल कागज़ की वस्तु मानकर उत्तर सीमित नहीं करना चाहिए।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कवि ने पतंग के माध्यम से बालमन की मुक्त कल्पना, उमंग और साहस की ओर संकेत किया है। पतंग उड़ाते बच्चे भय और बाधाओं को भूलकर आकाश छूना चाहते हैं। उनकी चंचलता और निर्भयता जीवन की असीम संभावनाओं को व्यक्त करती है।

चरण 3: निष्कर्ष पतंग बच्चों की स्वतंत्र कल्पना और ऊँची आकांक्षाओं का संकेत बनती है; उनका उत्साह जीवन के प्रति निर्भय विश्वास दिखाता है।

त्वरित सुझाव: पतंग को प्रतीक मानकर उत्तर में बच्चों की उमंग और साहस लिखें तथा छतों पर उनके निर्भय खेल से उसका संबंध जोड़ें।

6(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘हृदय थाम लेता संसार’ पंक्ति में संसार के हृदय थाम लेने का कारण ‘बादल राग’ कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बादल का गर्जन क्रांति और परिवर्तन का प्रतीक है। उसका प्रभाव शोषक और शोषित वर्ग पर अलग-अलग पड़ता है।
- पंक्ति का अर्थ कविता के अगले भाव, वज्रपात और बड़े लोगों के भय, से जोड़कर स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग और कारण समझें निराला बादल के भयंकर गर्जन में क्रांति की आवाज सुनते हैं। उसके वज्रपात से ऊँचे शिखर टूटते हैं। यह उन संपन्न और शक्तिशाली लोगों के पतन का संकेत है जिनकी सत्ता शोषण पर टिकी है। इसीलिए गर्जन सुनकर उनका हृदय भय से काँप उठता है। इसके विपरीत छोटे पौधों का प्रसन्न होना साधारण जन की आशा व्यक्त करता है। यह विरोध स्पष्ट करता है कि क्रांति का भय मुख्यतः विशेषाधिकार पाने वाले वर्ग को है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर बादल का भीषण गर्जन क्रांति का संकेत देता है। उससे शोषक और संपन्न वर्ग अपनी सत्ता तथा वैभव के नष्ट होने की आशंका से भयभीत हो जाता है। इसी विनाशकारी शक्ति के आतंक में संसार हृदय थाम लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष संसार के हृदय थाम लेने का कारण बादल की क्रांतिकारी, विनाशकारी शक्ति से उत्पन्न भय है।

त्वरित सुझाव: भय का कारण केवल तेज आवाज न लिखें; उसे शोषक वर्ग की सत्ता पर आने वाले संकट से जोड़ें।

7(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

फूलों के खिलने से कविता का क्या संबंध है ? ‘कविता के बहाने’ कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण फूल और कविता के खिलने में सौंदर्य तथा आनंद का साम्य दिखाते हैं।
- कविता की कल्पना और अर्थ फूल के सीमित जीवन से आगे जाते हैं; इसलिए समानता के साथ अंतर बताना आवश्यक है।

चरण 1: फूल और कविता के साम्य को समझें फूल का खिलना प्रकृति में सौंदर्य और प्रसन्नता फैलाता है। इसी प्रकार कविता का रचना-जगत पाठक के मन में आनंद, संवेदना और कल्पना का विस्तार करता है। कविता में खिलने का आशय भौतिक पंखुड़ियाँ खुलना नहीं, बल्कि भावों और अर्थों का विकसित होना है।

चरण 2: उनकी सीमाओं का अंतर पहचानें फूल का जीवन निश्चित समय और स्थान में सीमित है। वह खिलकर मुरझा जाता है, जबकि कविता पढ़े जाने पर अलग-अलग समय के पाठकों के भीतर नए अर्थ खोलती है। उसके प्रभाव को फूल के जीवन की तरह किसी निश्चित अवधि में नहीं बाँधा जा सकता। इसीलिए कवि फूल के माध्यम से कविता के असीम विस्तार को उजागर करता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर फूलों की तरह कविता भी खिलकर सौंदर्य, आनंद और उल्लास का प्रसार करती है। फूल प्रकृति को सुंदर बनाते हैं और कविता मानव-मन में भावों तथा कल्पना को विकसित करती है। पर फूल समय के साथ मुरझा जाते हैं; कविता का प्रभाव समय और स्थान की सीमाओं से आगे फैलता है। उसके अर्थ और आनंद निरंतर नए रूप में खिलते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष फूल और कविता सौंदर्य तथा आनंद में समान हैं, किंतु कविता का खिलना फूलों के क्षणिक जीवन से कहीं अधिक व्यापक है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले खिलने की समानता और फिर कविता के असीम प्रभाव का अंतर स्पष्ट करें।

7(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

“ ‘कैमरे में बंद अपाहिज’ कविता हर ऐसे व्यक्ति की ओर इशारा करती है, जो दुख-दर्द, यातना-वेदना को बेचना चाहता है।” कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता करुणा के प्रदर्शन के पीछे छिपी संवेदनहीनता और व्यावसायिक स्वार्थ पर व्यंग्य करती है।
- कार्यक्रम-संचालक के प्रश्न और पीड़ित से रोने की अपेक्षा इस आलोचना के ठोस आधार हैं।

चरण 1: कविता की स्थिति पहचानें टेलीविजन कार्यक्रम का संचालक अपाहिज व्यक्ति को कैमरे के सामने लाकर उसकी पीड़ा दिखाना चाहता है। प्रश्न पूछते समय उसका उद्देश्य उस व्यक्ति की गरिमा और सहजता बचाना नहीं, दर्शकों के सामने प्रभावशाली दृश्य तैयार करना है। पीड़ित की अपनी इच्छा कार्यक्रम की योजना के अधीन हो जाती है।

चरण 2: दुख को बेचने का आशय स्पष्ट करें संचालक चाहता है कि पीड़ित अपनी यातना प्रकट करे और रो पड़े, ताकि दर्शक भावुक हों। इस प्रकार किसी की वास्तविक तकलीफ दूसरों के मनोरंजन और कार्यक्रम की लोकप्रियता का साधन बनती है। कविता इस प्रवृत्ति को केवल एक संचालक तक सीमित नहीं रखती; वह करुणा का दिखावा करके निजी लाभ लेने वाले सभी लोगों को कठघरे में खड़ा करती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कविता में संचालक अपाहिज की सहायता से अधिक उसकी पीड़ा का प्रभावशाली प्रदर्शन चाहता है। वह ऐसे प्रश्न पूछता है जिनसे अपाहिज रो पड़े और दर्शक भावुक हो जाएँ। दुख यहाँ कार्यक्रम की लोकप्रियता का साधन बन जाता है। इस प्रकार कविता उन सभी संवेदनहीन लोगों पर व्यंग्य करती है जो दूसरों की यातना को अपने लाभ के लिए बेचते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कविता दुख के प्रति वास्तविक संवेदना के स्थान पर उसके स्वार्थपूर्ण प्रदर्शन और उपभोग की आलोचना करती है।

त्वरित सुझाव: पीड़ित को रूलाने की इच्छा का उदाहरण देकर उसे लोकप्रियता और स्वार्थ से जोड़ें।

7(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘कवितावली’ में तुलसीदास ने अपने समाज की किन सामाजिक बुराइयों का उल्लेख किया है ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास की कवितावली में भूख, बेरोजगारी और आजीविका के संकट से त्रस्त समाज का चित्र है।
- जातिगत भेदभाव, सामाजिक संकीर्णता और पेट की विवशता को पाठ के प्रसंगों से स्पष्ट किया जाना चाहिए।

चरण 1: आर्थिक दुर्दशा के उदाहरण समझें तुलसीदास किसान के पास खेती, भिखारी के पास भीख, व्यापारी के पास व्यापार और सेवक के पास काम न होने की स्थिति दिखाते हैं। आजीविका के अभाव से लोग चिंतित और असहाय हैं। पेट की आग इतनी प्रबल है कि मनुष्य अनुचित कार्य करता और अपनी संतान तक बेचने को विवश हो जाता है। यह चित्र सामाजिक व्यवस्था की अमानवीयता उजागर करता है।

चरण 2: सामाजिक भेदभाव को पहचानें कवि जाति-पाँति, ऊँच-नीच और संकीर्ण धार्मिक-सामाजिक मान्यताओं का भी विरोध करते हैं। लोगों द्वारा जाति और पहचान के आधार पर लगाए जाने वाले आरोपों से वे विचलित नहीं होते। उनके लिए राम की भक्ति और मानवीय आचरण महत्वपूर्ण हैं। इस दृष्टि से कविता सामाजिक प्रतिष्ठा के खोखले आग्रहों को चुनौती देती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर तुलसीदास ने समाज में फैली गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी और आजीविका के संकट का उल्लेख किया है। किसान, व्यापारी, भिखारी और सेवक सभी साधनहीन हैं। पेट भरने के लिए लोग अनुचित काम करते और संतान तक बेचते हैं। साथ ही कवि जाति-पाँति, ऊँच-नीच, धार्मिक संकीर्णता तथा मनुष्य को उसकी जातीय पहचान से आँकने की प्रवृत्ति का विरोध करते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कवितावली आर्थिक शोषण और भूख के साथ जातिगत भेदभाव तथा सामाजिक संकीर्णता को भी उजागर करती है।

त्वरित सुझाव: आर्थिक बुराइयों के साथ जातिगत भेदभाव अवश्य लिखें और किसान तथा सेवक के प्रसंग से पुष्टि करें।

8. छोटा मेरा खेत चौकोना

कागज़ का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया निःशेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
झूमने लगे फल,
रस अलौकिक,
अमृत धाराएँ फूटतीं
रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।

[5 अंक]

8(i). 'छोटा मेरा खेत' कविता के मूल भाव के बारे में सही कथन है :

[1 अंक]

- (A) कविता को व्यवसाय के रूप में देखा गया है।
(B) इसमें श्रव्य बिंब का प्रयोग किया गया है।
(C) यह ऐसा खेत है जिसके चार कोने हैं।
(D) यह सृजन कर्म के शाश्वत भाव की कविता है।

सही उत्तर: (D) यह सृजन कर्म के शाश्वत भाव की कविता है।

हल:

अवधारणा:

- कविता में कागज़ को खेत और साहित्यिक रचना को उसकी उपज के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- रचना का आनंद अनेक पाठकों तक पहुँचकर भी कम नहीं होता; इसी से उसकी शाश्वतता व्यक्त होती है।

चरण 1: निर्णायक पंक्तियों का अर्थ कवि कहता है कि रोपाई क्षण की है, किंतु कटाई अनंतता की। किसी क्षण उत्पन्न भाव कविता का रूप लेकर लंबे समय तक पाठकों को आनंद देता रहता है। अंतिम पंक्ति में लुटते रहने पर भी रस का कम न होना इसी स्थायी प्रभाव को स्पष्ट करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) गलत है, क्योंकि कविता को लाभ कमाने का व्यवसाय नहीं कहा गया है। (B) में दिया श्रव्य बिंब कविता का मूल संदेश नहीं है। (C) केवल खेत के चौकोने आकार को वास्तविक अर्थ में लेता है, जबकि यह कागज़ का प्रतीक है। इसलिए मूल भाव सृजन की शाश्वतता है।

चरण 3: निष्कर्ष यह सृजन कर्म के शाश्वत भाव की कविता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: मूल भाव पूछे जाने पर प्रतीकों के बाहरी आकार के बजाय कविता की अंतिम पंक्तियों में व्यक्त स्थायी संदेश पहचानिए।

8(ii). कविता की रचना-प्रक्रिया के संदर्भ में 'अंधड़' क्या है ?

[1 अंक]

- (A) अलंकारों की अधिकता
- (B) भाषा की कठिनता
- (C) भावनाओं का आवेग
- (D) पंक्तियों की अधिकता

सही उत्तर: (C) भावनाओं का आवेग

हल:

अवधारणा:

- काव्य-रचना में बाहरी या भीतरी अनुभूति भावों को तीव्र करके सृजन की प्रेरणा देती है।
- अंधड़ का रूपक उस तीव्र भावात्मक हलचल को व्यक्त करता है जिससे विचार का बीज जन्म लेता है।

चरण 1: अंधड़ का संदर्भ समझिए अंधड़ आने के बाद क्षण का बीज बोया जाता है और कल्पना उसे शब्दों के अंकुर में बदलती है। इस क्रम में अंधड़ रचनाकार के मन में उठने वाले भावनाओं के आवेग का संकेत है। वह मन को आंदोलित करके कविता की शुरुआत कराता है।

चरण 2: शेष विकल्पों को परखिए (A) अलंकारों की अधिकता शैली से जुड़ी है; यहाँ अलंकार गिनने की बात नहीं है। (B) भाषा की कठिनता का उल्लेख काव्यांश में नहीं है। (D) पंक्तियों की अधिकता भी भावों के जन्म का कारण नहीं है। इसलिए ये तीनों विकल्प रचना-प्रेरणा का अर्थ नहीं बताते।

चरण 3: निष्कर्ष अंधड़ भावनाओं के आवेग का प्रतीक है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: अंधड़ के तुरंत बाद बीज बोए जाने का क्रम देखिए; इससे रचना को जन्म देने वाले भावावेग का संकेत मिलता है।

8(iii). कवि अपने छोटे खेत में कौन-से बीज बोता है ?

[1 अंक]

- (A) चावल के
- (B) विचारों के
- (C) ईर्ष्या के
- (D) कागज़ के

सही उत्तर: (B) विचारों के

हल:

अवधारणा:

- कवि का खेत कागज़ का पन्ना है; उसमें बोया गया बीज अनुभूति से उपजा विचार है।
- कल्पना विचार को विकसित करती है और वह शब्दों, भावों तथा काव्य-रस के रूप में फलता है।

चरण 1: बीज के लाक्षणिक अर्थ को पहचानिए काव्यांश में क्षण का बीज कल्पना के रसायनों को पीकर शब्दों के अंकुर उत्पन्न करता है। इसलिए यह खेती का साधारण बीज नहीं, किसी विशेष क्षण में मन में पैदा हुआ विचार है। कवि उसी विचार को कागज़ पर रचना के रूप में विकसित करता है।

चरण 2: अन्य विकल्प हटाइए (A) चावल के बीज वास्तविक कृषि से संबंधित हैं, जबकि यहाँ कविता की रचना समझाई गई है। (C) ईर्ष्या का भाव काव्यांश में नहीं है। (D) कागज़ स्वयं खेत का प्रतीक है; उसे बीज कहना रूपक के संबंध को उलट देता है। इस कारण केवल विचारों के बीज उपयुक्त हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कवि अपने छोटे खेत में विचारों के बीज बोता है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: रूपक में कागज़ को खेत मानने के बाद बीज का अर्थ विचार और शब्दों के अंकुर का अर्थ उसकी अभिव्यक्ति रखिए।

8(iv). कवि ने कवि-कर्म की तुलना किससे की है ?

[1 अंक]

- (A) भवन-निर्माण से
(B) कृषि-कर्म से
(C) शिक्षा-दीक्षा से
(D) व्यवसाय से
- सही उत्तर:** (B) कृषि-कर्म से

हल:

अवधारणा:

- कवि ने रचना की प्रक्रिया समझाने के लिए खेती की प्रक्रिया का विस्तृत रूपक अपनाया है।
- बीज, अंकुर, पल्लव, पुष्प, फल, रोपाई और कटाई कृषि से जुड़े शब्द हैं।

चरण 1: रूपक के दोनों पक्ष जोड़िए कागज़ का पन्ना खेत है और क्षण में जन्मा विचार उसका बीज है। कल्पना उसे पोषण देती है, शब्द अंकुर बनते हैं तथा कविता रसयुक्त फल देती है। जैसे किसान बीज बोकर फसल प्राप्त करता है, वैसे ही कवि अनुभूति को शब्द देकर रचना तैयार करता है।

चरण 2: विकल्पों से मिलान कीजिए (A) भवन-निर्माण होता तो नींव, ईंट या दीवार जैसे संकेत मिलते। (C) शिक्षा-दीक्षा के लिए गुरु और अध्ययन का प्रसंग अपेक्षित होता। (D) व्यवसाय में क्रय-विक्रय या लाभ का संदर्भ होता। यहाँ निरंतर खेती की शब्दावली है, इसलिए कृषि-कर्म ही सही तुलना है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने कवि-कर्म की तुलना कृषि-कर्म से की है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: तुलना पहचानने के लिए एक शब्द पर नहीं, बीज से कटाई तक बार-बार प्रयुक्त एक ही क्षेत्र की शब्दावली पर ध्यान दीजिए।

8(v). 'कटाई अनंतता की' का प्रतीकार्थ है :

[1 अंक]

- (A) रोपाई के बाद कटाई
(B) कटाई कर्म अनंत
(C) साहित्य कालजयी
(D) फलों की काट-छाँट

सही उत्तर: (C) साहित्य कालजयी

हल:

अवधारणा:

- क्षण की अनुभूति से बनी श्रेष्ठ रचना समय की सीमा पार करके आनंद देती रहती है।
- अनंत कटाई का आशय काव्य-रस का निरंतर आस्वादन है, जो बाँटने से समाप्त नहीं होता।

चरण 1: पंक्ति का भाव खोलिए रोपाई क्षण की और कटाई अनंतता की में रचना के जन्म तथा उसके प्रभाव की अवधि का अंतर है। कविता किसी क्षण की प्रेरणा से जन्म लेती है, पर उसका सौंदर्य और आनंद पीढ़ियों तक पाठकों को मिलता है। इसलिए यह साहित्य के कालजयी होने का संकेत है।

चरण 2: भौतिक अर्थ वाले विकल्प हटाइए (A) केवल रोपाई के बाद कटाई का सामान्य क्रम बताता है। (B) खेत की कटाई को अंतहीन काम मानता है। (D) फलों की काट-छाँट तक सीमित है। ये वास्तविक कृषि के अर्थ हैं; काव्यांश के साहित्यिक और प्रतीकात्मक आशय को केवल विकल्प (C) व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कटाई अनंतता की का प्रतीकार्थ है कि साहित्य कालजयी होता है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: प्रतीकार्थ पूछे जाने पर कटाई को वास्तविक फसल से जोड़ने के बजाय पाठकों को निरंतर मिलने वाले काव्य-आनंद से जोड़िए।

9(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

भक्तिन के जीवन में धर्म और आस्था की क्या भूमिका थी ? पाठ के आधार पर लिखिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धार्मिक विश्वास भक्तिन के व्यक्तित्व, आचार और जीवन के निर्णयों को प्रभावित करते हैं। पाठ के विशिष्ट प्रसंगों से इस प्रभाव को स्पष्ट करना चाहिए।
- भक्तिन की आस्था में भक्ति, परंपरागत नियम और अपनी सुविधा के अनुकूल धार्मिक व्याख्या साथ-साथ दिखाई देते हैं।

चरण 1: प्रसंगों का चयन भक्तिन के धार्मिक जीवन को समझाने के लिए सिर मुँड़ाना, कंठी धारण करना, तीर्थयात्रा और भोजन की पवित्रता संबंधी नियम उपयुक्त उदाहरण हैं। उसके चौके की सीमा और छुआछूत के आग्रह परंपरागत संस्कारों को दिखाते हैं। इनसे स्पष्ट होता है कि धर्म उसके व्यवहार का निजी आधार था।

चरण 2: उत्तर की रूपरेखा उत्तर में पहले आस्था के प्रभाव का उल्लेख करें, फिर पाठ के उदाहरण दें और अंत में उसकी व्यक्तिगत धार्मिक समझ स्पष्ट करें। धर्म को केवल दिखावा या केवल उदार आध्यात्मिकता कहना अधूरा होगा। वह अपने नियमों पर दृढ़ रहती है और प्रचलित विश्वासों को अपनी समझ से स्वीकार करती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर धर्म और आस्था भक्तिन के जीवन का महत्वपूर्ण आधार थे। उसने सिर मुँड़कर कंठी धारण की और तीर्थयात्राएँ कीं। वह भोजन की शुद्धता, चौके की पवित्रता तथा छुआछूत के नियमों का कठोरता से पालन करती थी। धार्मिक मान्यताएँ उसे जीवन का सहारा देती थीं। साथ ही, वह परंपराओं की व्याख्या अपने अनुभव और सुविधा के अनुसार भी कर लेती थी।

चरण 4: निष्कर्ष भक्तिन के धार्मिक विश्वासों ने उसके जीवन-व्यवहार को दिशा दी; उनमें भक्ति, रूढ़ संस्कार और उसका व्यक्तिगत विवेक एक साथ उपस्थित थे।

त्वरित सुझाव: धर्म की सामान्य प्रशंसा करने के बजाय कंठी, तीर्थयात्रा और चौके की पवित्रता जैसे पाठ के ठोस प्रसंग लिखिए।

9(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘बिना त्याग के दान नहीं होता।’ ‘काले मेघा पानी दे’ पाठ के इस कथन के आधार पर जीवन में त्याग और दान के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दान की सार्थकता अपने उपयोग की वस्तु छोड़कर दूसरों के हित में लगाने से है।
- त्याग अभाव में भी दूसरों की आवश्यकता का अनुभव करने और सहायता करने की उदार वृत्ति है।

चरण 1: कथन का प्रसंग समझिए सूखे के समय इंदर सेना पर पानी डालने को लेखक पानी की बरबादी मानता है। जीजी समझाती हैं कि जिस वस्तु की कमी हो, उसी को दूसरों के लिए देना त्याग है। केवल बेकार या बची हुई वस्तु छोड़ देना त्यागपूर्ण दान नहीं होता। इस प्रसंग में पानी का दान व्यक्तिगत सुविधा से ऊपर उठकर सामूहिक कल्याण की भावना व्यक्त करता है।

चरण 2: जीवन में उसका अर्थ जोड़िए दान को प्रदर्शन, बदले में लाभ पाने की इच्छा या अनुपयोगी सामान हटाने तक सीमित नहीं करना चाहिए। अपने धन, समय, श्रम और सुविधा का कुछ भाग जरूरतमंदों को समर्पित करना उसका व्यापक रूप है। पाठ में बीज बोने का संकेत भी यही है कि कुछ छोड़ने से व्यापक फल संभव होता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर त्याग अपने सुख और आवश्यकता का कुछ अंश दूसरों के हित में छोड़ना है। दान उसी त्याग का उदार रूप है। जीजी के अनुसार पानी की कमी में पानी देना सच्चा दान है, क्योंकि उसमें अपनी जरूरत का त्याग है। जीवन में धन, समय और श्रम से जरूरतमंदों की सहायता करना तथा सामूहिक कल्याण को महत्व देना सार्थक दान है।

चरण 4: निष्कर्ष सच्चा दान अपनी उपयोगी वस्तु या सुविधा का त्याग करके दूसरों के कल्याण के लिए किया जाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में जीजी के पानी वाले प्रसंग को जोड़कर त्याग और दान का संबंध स्पष्ट कीजिए।

9(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘श्रम विभाजन और जाति प्रथा’ पाठ के आधार पर उन तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जिनके कारण प्रायः समाज में असमानताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में मनुष्य की क्षमता में अंतर के तीन आधार शारीरिक वंश-परंपरा, सामाजिक उत्तराधिकार और उसके अपने प्रयत्न बताए गए हैं।
- प्रयत्नों की तुलना तभी न्यायपूर्ण है जब वंशगत और सामाजिक सुविधाओं से उत्पन्न अंतर को भी समझा जाए।

चरण 1: शारीरिक वंश-परंपरा समझिए आंबेडकर मानते हैं कि सभी मनुष्य एक जैसे नहीं होते। पहला आधार शारीरिक वंश-परंपरा है। जन्म से प्राप्त शरीर, स्वास्थ्य और अन्य शारीरिक क्षमताओं में अंतर हो सकता है। यह व्यक्ति के अपने चुनाव का परिणाम नहीं है, फिर भी उसकी कार्यक्षमता और उपलब्धियों को प्रभावित करता है।

चरण 2: सामाजिक उत्तराधिकार और प्रयत्न स्पष्ट कीजिए दूसरा आधार सामाजिक उत्तराधिकार है। परिवार की देखभाल, माता-पिता की सामाजिक स्थिति, शिक्षा और संचित ज्ञान जैसी सुविधाएँ सबको बराबर नहीं मिलतीं। तीसरा आधार व्यक्ति के अपने प्रयत्न हैं। मेहनत और लगन में अंतर से भी उपलब्धियाँ भिन्न होती हैं। लेखक पहले दो आधारों पर पक्षपात का विरोध करते हैं, जिससे प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता विकसित करने का अवसर मिले।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर पाठ के अनुसार मनुष्यों में असमानता के तीन आधार हैं। पहला, शारीरिक वंश-परंपरा, जिससे जन्मजात शारीरिक क्षमताओं में भिन्नता आती है। दूसरा, सामाजिक उत्तराधिकार, जिसमें परिवार की देखभाल, माता-पिता की सामाजिक स्थिति, शिक्षा और संचित ज्ञान जैसी सुविधाएँ आती हैं। तीसरा, मनुष्य के अपने प्रयत्न हैं। इन तीनों की भिन्नता से व्यक्तियों की क्षमता, प्रगति और उपलब्धियों में अंतर दिखाई देता है।

चरण 4: निष्कर्ष असमानता के तीन आधार शारीरिक वंश-परंपरा, सामाजिक उत्तराधिकार और व्यक्ति के अपने प्रयत्न हैं।

त्वरित सुझाव: तीन आधारों को इसी क्रम में लिखिए; सामाजिक उत्तराधिकार के साथ शिक्षा और पारिवारिक स्थिति के उदाहरण दीजिए।

10. मन खाली नहीं रहना चाहिए, इसका मतलब यह नहीं है कि वह मन बंद रहना चाहिए। जो बंद हो जाएगा, वह शून्य हो जाएगा। शून्य होने का अधिकार बस परमात्मा का है जो सनातन भाव से संपूर्ण है। शेष सब अपूर्ण है। इससे मन बंद नहीं रह सकता। सब इच्छाओं का निरोध कर लोगे, यह झूठ है और अगर ‘इच्छानिरोधस्तपः’ का ऐसा ही नकारात्मक अर्थ हो तो वह तप झूठ है। वैसे तप की राह रेगिस्तान को जाती होगी, मोक्ष की राह वह नहीं है। ठाठ देकर मन को बंद कर रखना जड़ता है। लोभ का यह जीतना नहीं है कि जहाँ लोभ होता है, यानी मन में, वहाँ नकार हो ! यह तो लोभ की ही जीत है और आदमी की हार। आँख अपनी फोड़ डाली, तब लोभनीय के दर्शन से बचे तो क्या हुआ ? ऐसे क्या लोभ मिट जाएगा ? और कौन कहता है कि आँख फूटने पर रूप दीखना बंद हो जाएगा ? सच्चा ज्ञान सदा अपूर्णता के बोध को हम में गहरा करता है। सच्चा कर्म सदा इस अपूर्णता की स्वीकृति के साथ होता है।

[5 अंक]

10(i). गद्यांश के अनुसार ‘आँख फोड़ना’ का अभिप्राय है :

[1 अंक]

- (A) शारीरिक विकलांगता को बढ़ावा देना
- (B) लोभ से बचने हेतु साधन को ही नष्ट कर देना
- (C) दृष्टि को स्थायी रूप से खो देना
- (D) तपस्या का सबसे उच्च स्थान प्राप्त करना

सही उत्तर: (B) लोभ से बचने हेतु साधन को ही नष्ट कर देना

हल:

अवधारणा:

- अलंकारिक अभिव्यक्ति का अर्थ उसके प्रसंग से निर्धारित होता है।

- साधन नष्ट कर देना मन में बसे लोभ का वास्तविक समाधान नहीं है।

चरण 1: प्रसंग से अर्थ निकालिए लेखक पूछते हैं कि आँख फोड़ देने पर भी क्या लोभ मिट जाएगा। आँख यहाँ देखने का साधन है; उसे नष्ट कर लोभनीय वस्तु से बचना भीतर की इच्छा को जीतना नहीं है। इसीलिए अभिव्यक्ति का आशय लोभ से बचने के लिए साधन को ही समाप्त कर देना है।

चरण 2: अन्य विकल्प जाँचिए (A) विकलांगता को प्रोत्साहित करने का आशय पाठ में नहीं है। (C) केवल शारीरिक दृष्टिहीनता बताता है, जबकि प्रश्न प्रसंगगत अभिप्राय पूछता है। (D) गलत है क्योंकि लेखक ऐसे नकारात्मक उपाय को सच्ची तपस्या नहीं मानते। (B) साधन नष्ट करने के इसी भाव को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है : लोभ से बचने हेतु साधन को ही नष्ट कर देना।

त्वरित सुझाव: मुहावरे जैसी अभिव्यक्ति का अर्थ उसके पहले और बाद के तर्क से मिलाइए।

10(ii). लेखक के अनुसार 'मन को बंद कर देना' क्यों सही नहीं है ?

[1 अंक]

- (A) इससे मन प्रतिष्ठित रूप से शांत हो जाता है।
- (B) इससे लोभ का नाश हो जाता है।
- (C) इससे मन जड़ हो जाता है।
- (D) इससे मन सपने देखना बंद कर देता है।

सही उत्तर: (C) इससे मन जड़ हो जाता है।

हल:

अवधारणा:

- मन को बंद करना इच्छाओं पर विवेकपूर्ण नियंत्रण का पर्याय नहीं है।
- गद्यांश मन की सक्रियता और ग्रहणशीलता का समर्थन करता है।

चरण 1: निर्णायक वाक्य पहचानिए लेखक स्पष्ट कहते हैं कि ठाठ देकर मन को बंद कर रखना जड़ता है। मनुष्य अपूर्ण है, इसलिए उसका मन बंद नहीं रह सकता। इच्छाओं का अंधा निषेध उसे सचेत और विवेकी बनाने के बजाय निष्क्रिय कर देता है।

चरण 2: चारों विकल्पों की तुलना (C) सीधे इसी जड़ता को व्यक्त करता है। (A) में बताई शांति लेखक का निष्कर्ष नहीं है। (B) गलत है, क्योंकि लेखक इसे लोभ की जीत और आदमी की हार कहते हैं। (D) में सपने बंद होने की बात है, जिसका गद्यांश में ऐसा कोई आधार नहीं दिया गया।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : इससे मन जड़ हो जाता है।

त्वरित सुझाव: कारण पूछने वाले प्रश्न में लेखक के सीधे कथन को पहले खोजिए और उसी से विकल्प मिलाइए।

10(iii). गद्यांश के अनुसार 'सच्चा ज्ञान' किस प्रकार की भावना से प्राप्त हो सकता है ?

[1 अंक]

- (A) पूर्णता की भावना से
- (B) अपूर्णता के बोध से
- (C) पूर्णता के नाश से
- (D) मनमानी छूट से

सही उत्तर: (B) अपूर्णता के बोध से

हल:

अवधारणा:

- सच्चा ज्ञान अपनी सीमाओं तथा अपूर्णता का अनुभव गहरा करता है।
- पूर्ण होने का अहंकार सीखने और समझने की प्रक्रिया रोकता है।

चरण 1: गद्यांश का साक्ष्य देखिए अंत में लेखक कहते हैं कि सच्चा ज्ञान हममें अपूर्णता के बोध को गहरा करता है। प्रश्न के विकल्पों में इसी आत्मबोध को पहचानना है। अपनी सीमाओं की स्वीकृति मनुष्य को अधिक ग्रहणशील और कर्मशील बनाती है।

चरण 2: अन्य भावनाएँ क्यों अनुपयुक्त हैं (A) पूर्णता की भावना गद्यांश के अपूर्णता-बोध के विपरीत है। (C) में पूर्णता के नाश की बात है, जबकि लेखक अपनी अपूर्णता पहचानने पर बल देते हैं। (D) मनमानी छूट का समर्थन नहीं मिलता। (B) लेखक के स्पष्ट कथन से सीधे मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है : अपूर्णता के बोध से।

त्वरित सुझाव: सच्चा ज्ञान संबंधी प्रश्न में अंतिम वाक्यों के अपूर्णता शब्द पर ध्यान दीजिए।

10(iv). गद्यांश के अनुसार लोभ से बचने का क्या उपाय है ?

[1 अंक]

- (A) मन को बंद रखना
- (B) मन को भरा रखना
- (C) मन को संयमित रखना
- (D) मन की इच्छा पूरी करना

सही उत्तर: (C) मन को संयमित रखना

हल:

अवधारणा:

- लोभ पर विजय का आधार मन का विवेकपूर्ण संयम है।
- मन की इच्छाएँ दबाने या हर इच्छा पूरी करने से लोभ समाप्त नहीं होता।

चरण 1: लेखक के तर्क को जोड़िए लेखक मन को बंद रखने और इंद्रियों को नष्ट करने को लोभ का समाधान नहीं मानते। वे अपूर्णता की स्वीकृति के साथ कर्म करने की बात करते हैं। इससे स्पष्ट है कि मन को सक्रिय रखते हुए उसकी इच्छाओं को विवेक से नियंत्रित करना चाहिए।

चरण 2: विकल्पों का भेद समझिए (A) को लेखक जड़ता कहते हैं। (B) में केवल मन भरा रखने की बात है; भराव यदि वस्तुओं के लोभ से हो तो समस्या बनी रहती है। (D) हर इच्छा पूरी करने से लोभ बढ़ सकता है। (C) में संयम मन को बंद किए बिना उचित नियंत्रण का भाव देता है, इसलिए यही उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : मन को संयमित रखना।

त्वरित सुझाव: मन को बंद करने, केवल भरने और विवेकपूर्ण संयम रखने के बीच का अंतर पहचानिए।

10(v). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

I. लोभ का नकार ही लोभ की जड़ है और यह व्यक्ति की हार है।

II. लोभ को दबाना ही उसे जीतना है।

III. संयमित मन ही लोभ पर विजय पा सकता है।

इन कथनों में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं ?

[1 अंक]

(A) कथन I सही है, कथन II गलत है।

(B) कथन I गलत है, कथन II सही है।

(C) कथन I और III सही हैं।

(D) कथन II और III सही हैं।

सही उत्तर: (C) कथन I और III सही हैं।

हल:

अवधारणा:

- कथनों का परीक्षण गद्यांश के नकार और संयम के बीच के भेद से कीजिए।
- इच्छाओं का दमन लोभ पर वास्तविक विजय नहीं है।

चरण 1: कथन I और II परखिए कथन I का आशय है कि लोभ के स्थान अर्थात् मन को नकार देने में व्यक्ति की हार होती है। गद्यांश भी इसे लोभ की जीत और आदमी की हार कहता है; इस प्रसंग में I सही है। कथन II गलत है, क्योंकि लेखक लोभ दबाने या मन बंद करने को उसे जीतना नहीं मानते।

चरण 2: कथन III और विकल्पों का निर्णय संयमित मन इच्छाओं का विवेकपूर्ण नियंत्रण करता है, इसलिए III सही है। (A) में I और II का मूल्यांकन ठीक है, लेकिन वह सही कथन III को शामिल नहीं करता। (B) दोनों का उलटा मूल्यांकन करता है। (D) गलत कथन II को स्वीकार करता है। सभी सही कथनों का पूरा समुच्चय I और III है, जो (C) में है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : कथन I और III सही हैं।

त्वरित सुझाव: पहले प्रत्येक कथन को अलग सही या गलत ठहराएँ, फिर सभी सही कथनों वाला पूरा विकल्प चुनिए।

11(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

श्रम विभाजन और श्रमिक-विभाजन में अंतर 'जाति प्रथा और श्रम विभाजन' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- श्रम-विभाजन कार्यों की व्यवस्था है; श्रमिक-विभाजन मनुष्यों को जन्म के आधार पर स्थायी ऊँच-नीच में बाँटता है।
- पाठ में डॉ. आंबेडकर उपयोगी श्रम-विभाजन तथा जाति-आधारित श्रमिक-विभाजन का अंतर स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: कार्य और व्यक्ति में अंतर पहचानिए समाज के अनेक काम अलग-अलग लोगों द्वारा करना श्रम-विभाजन है। इसका आधार व्यक्ति की योग्यता, रुचि और प्रशिक्षण हो सकता है। इसमें काम बदलने तथा अपनी क्षमता विकसित करने की स्वतंत्रता बनी रहती है। इसके विपरीत जाति-प्रथा कार्य बाँटने के साथ श्रमिकों को भी जन्म के आधार पर अलग और ऊँच-नीच वाले वर्गों में बाँध देती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों का उत्तर श्रम-विभाजन समाज के कार्यों का आवश्यक बँटवारा है, जबकि श्रमिक-विभाजन मनुष्यों को जन्म के आधार पर ऊँच-नीच में बाँटता है। जाति-प्रथा व्यक्ति की रुचि और योग्यता की उपेक्षा करके उसका पेशा निश्चित करती है तथा व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता रोकती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार श्रम-विभाजन कार्यों की व्यवस्था है; श्रमिक-विभाजन मनुष्यों को जन्म के आधार पर स्थायी ऊँच-नीच में बाँटता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कार्यों के बँटवारे और जन्म से व्यक्तियों के बँटवारे को अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

11(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘शिरीष के फूल’ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने शिरीष के फूलों के माध्यम से जीवन के किस सत्य को उजागर किया है और क्यों ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सहज, मस्त और जीवन से जुड़ा रहने का आदर्श प्रस्तुत करता है।
- लेखक शिरीष की कोमलता को दुर्बलता नहीं, कठिन समय में जीवन्त बने रहने की शक्ति के रूप में देखते हैं।

चरण 1: प्राकृतिक उदाहरण का आशय समझिए भीषण गरमी और लू में भी शिरीष फूलता रहता है। बाहर की कठोरता उसकी आंतरिक सरसता को समाप्त नहीं कर पाती। लेखक उसकी इसी अनासक्त मस्ती से मनुष्य के लिए प्रेरणा ग्रहण करते हैं। संदेश कठिनाइयों से पलायन का नहीं, उनके बीच अपना संतुलन, कोमलता और रचनात्मक उल्लास बनाए रखने का है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों का उत्तर शिरीष के फूल बताते हैं कि विपरीत परिस्थितियों में भी मनुष्य को मस्त, सरस और आशावान रहना चाहिए। भीषण गरमी में उसका खिलना जीवन की अपराजेय शक्ति का प्रतीक है। इसलिए लेखक उससे अनासक्त रहकर कठिनाइयों के बीच जीने की प्रेरणा लेते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार शिरीष प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सहज, मस्त और जीवन से जुड़ा रहने का आदर्श प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: भीषण गरमी के बीच खिलने को मनुष्य की आशा, सरसता और अनासक्त मस्ती से जोड़िए।

11(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

पहलवान की ढोलक मृतप्राय गाँव वालों के लिए कैसे जीवनदायिनी थी ? ‘पहलवान की ढोलक’ पाठ के संदर्भ में लिखिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महामारी के भय और निराशा के बीच ढोलक की आवाज लोगों में संघर्ष की चेतना जगाती है।
- रेणु की कहानी में लुट्टन पहलवान की ढोलक दुःख से जूझते गाँव के लिए मनोबल का सहारा बनती है।

चरण 1: जीवनदायिनी होने का संदर्भ पहचानिए महामारी से पीड़ित गाँव में मृत्यु, सन्नाटा और भय व्याप्त थे। ऐसे वातावरण में रात को गूँजती ढोलक की आवाज लोगों को अकेलेपन और असहायता से कुछ देर के लिए बाहर लाती थी। पहलवान की संघर्षपूर्ण जीवन-शक्ति से जुड़ी उसकी थाप बीमारी से जूझने का साहस देती थी। यहाँ जीवनदायिनी का आशय शारीरिक उपचार नहीं, मानसिक संबल और जीवित रहने की इच्छा जगाना है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों का उत्तर महामारी और मृत्यु के आतंक से गाँव वाले निराश तथा भयभीत थे। रात के सन्नाटे में पहलवान की ढोलक की थाप उनमें साहस और जीवनी-शक्ति जगाती थी। उसकी आवाज मृत्यु-भय को दबाकर दुःख सहने और जीवन के लिए संघर्ष करने का संबल देती थी।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार महामारी के भय और निराशा के बीच ढोलक की आवाज लोगों में संघर्ष की चेतना जगाती है।

त्वरित सुझाव: ढोलक का प्रभाव बीमारी के इलाज के रूप में नहीं, मृत्यु-भय के विरुद्ध मानसिक संबल के रूप में लिखिए।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

“आधुनिकता की ओर बढ़ता हमारा समाज एक ओर कई नई उपलब्धियों को समेटे हुए है तो दूसरी ओर मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने वाले मूल्य कहीं घिसते चले गए हैं।” ‘सिल्वर वैडिंग’ कहानी के संदर्भ में लिखिए कि संबंधों में दूरी के क्या कारण हैं ? संबंधों को कैसे मज़बूत किया जा सकता है ?

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी में यशोधर बाबू और उनके परिवार के बीच पीढ़ियों के जीवनमूल्यों का अंतर दिखाई देता है। प्रश्न में इस अंतर के कारण और संबंध सुधारने के उपाय, दोनों अपेक्षित हैं।
- किशनदा से प्राप्त सादगी और सामुदायिकता की सीख यशोधर बाबू की दृष्टि को बनाती है। नई पीढ़ी आधुनिक रहन-सहन और व्यक्तिगत उन्नति को अधिक महत्त्व देती है।

चरण 1: कहानी से दूरी के कारण पहचानिए यशोधर बाबू अपने पुराने संस्कारों के आधार पर नए व्यवहारों का मूल्यांकन करते हैं। परिवार का नया रहन-सहन, उत्सव मनाने का ढंग और खर्च उन्हें सहज स्वीकार नहीं होते। दूसरी ओर बच्चे पिता की संवेदना और उनके अतीत को पूरी तरह नहीं समझते। इसलिए उत्तर में केवल बच्चों को दोषी ठहराने के स्थान पर दोनों पीढ़ियों के बीच संवाद और सहानुभूति की कमी दिखानी चाहिए। कहानी का आशय यह भी है कि बाहरी समृद्धि अपने-आप भावनात्मक निकटता नहीं लाती। परिवार में साथ रहने वालों को एक-दूसरे के अनुभव और आशंकाएँ समझने का सचेत प्रयास करना पड़ता है।

चरण 2: लगभग 100 शब्दों में उत्तर ‘सिल्वर वैडिंग’ में संबंधों की दूरी का कारण बदलते जीवनमूल्य और पीढ़ियों में संवादहीनता है। यशोधर बाबू सादगी, आत्मीयता और सामूहिकता के पक्षधर हैं, जबकि बच्चे आधुनिक सुविधाओं तथा निजी सफलता को प्राथमिकता देते हैं। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का समारोह भी उन्हें आत्मीय उल्लास से नहीं जोड़ पाता। परिवार उनकी संवेदनाओं को कम समझता है और वे नए तौर-तरीकों को सहज नहीं अपनाते। संबंध मज़बूत करने के लिए दोनों पीढ़ियाँ एक-दूसरे की बात सुनें, भावनाओं का सम्मान करें और समय दें। बुजुर्ग परिवर्तन स्वीकारें तथा युवा उनकी गरिमा बनाए रखें। उपहारों के साथ आत्मीय व्यवहार भी आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी संबंधों में संवेदनशीलता की आवश्यकता दिखाती है। पारस्परिक सम्मान, संवाद और बदलाव के प्रति उदारता से पारिवारिक निकटता बढ़ सकती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले कहानी से पीढ़ीगत अंतर का उदाहरण दीजिए, फिर उससे जुड़ा व्यावहारिक उपाय लिखिए; आधुनिकता की केवल निंदा करके उत्तर अधूरा न छोड़ें।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

‘जूझ’ कहानी से उद्धृत ‘दादा के हरेक तर्क को दत्ता जी राव ने काट दिया’। – पंक्ति के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि दादा ने वे कौन-से तर्क दिए जिससे उन्हें लेखक को पाठशाला न भेजना पड़े ? उन तर्कों की दत्ता जी राव ने क्या प्रतिक्रिया दी ?

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव के आत्मकथात्मक पाठ में शिक्षा पाने की इच्छा और पिता की रोक के बीच संघर्ष है। यहाँ दादा लेखक के पिता हैं; दत्ता जी राव शिक्षा के समर्थक सहायक व्यक्ति हैं।
- उत्तर में खेत के काम और बुरी आदतों के बहाने अलग-अलग स्पष्ट करके उनके विरुद्ध दत्ता जी राव की प्रतिक्रिया बतानी है।

चरण 1: प्रसंग और उत्तर का क्रम लेखक पढ़ना चाहता था, पर उसे खेती में लगा दिया गया था। माँ और बेटे की बात सुनने के बाद दत्ता जी राव ने दादा से पूछताछ की। पहले काम का बहाना, फिर लेखक पर लगाए आरोप और अंत में पढ़ाई चालू कराने का निर्णय लिखने से उत्तर का क्रम स्पष्ट रहेगा। आरोपों को लेखक की प्रमाणित आदतों की तरह नहीं, दादा के तर्कों की तरह प्रस्तुत करना आवश्यक है। दत्ता जी राव की प्रतिक्रिया केवल उपदेश तक सीमित नहीं थी। उन्होंने आवश्यकता पड़ने पर लेखक को अपने यहाँ रखकर पढ़ाने की जिम्मेदारी लेने की बात कही। इस ठोस विकल्प से दादा का दबाव कम हुआ। उत्तर में इस आश्वासन का उल्लेख उनकी सहृदयता और शिक्षा के प्रति

प्रतिबद्धता स्पष्ट करता है।

चरण 2: लगभग 100 शब्दों में उत्तर दादा का तर्क था कि खेतों में पानी देने वाला कोई नहीं है। उन्होंने लेखक की कथित बुरी आदतों का बहाना भी बनाया: वह कंडे-चारा बेचता, सिनेमा देखता और खेलता है; खेती तथा घर के काम में ध्यान नहीं देता। इसलिए उसे निगरानी में रखा है। दत्ता जी राव ने पूछा कि दादा स्वयं काम क्यों नहीं करते। उन्होंने पत्नी-बच्चों से काम कराने और स्वयं घूमने पर उन्हें फटकारा। कभी सिनेमा देखने या खेलने के कारण पढ़ाई रोकना अनुचित बताया। उन्होंने लेखक को नियमित पढ़ने, फीस भरने और वर्ष बचाने को कहा तथा आवश्यकता पड़ने पर स्वयं पढ़ाने का आश्वासन दिया।

चरण 3: निष्कर्ष दत्ता जी राव ने दादा के बहानों को अस्वीकार कर लेखक की शिक्षा का मार्ग खोला। उनकी दृढ़ सहायता से दादा को उसे फिर पाठशाला भेजना स्वीकार करना पड़ा।

त्वरित सुझाव: दादा के आरोप और दत्ता जी राव के उत्तर को आमने-सामने रखिए; खेत के काम की वास्तविक आवश्यकता और पढ़ाई रोकने के बहाने में अंतर स्पष्ट कीजिए।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

लेखक ने 'अतीत में दबे पाँव' शीर्षक ही क्यों चुना ? इस पाठ से उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी का यह यात्रा-वृत्तांत मोहनजोदड़ो के अवशेषों में सुरक्षित सिंधु सभ्यता के जीवन से परिचित कराता है। शीर्षक की सार्थकता स्थान, अनुभव और लेखक की संवेदनशील दृष्टि से स्पष्ट होती है।
- 'दबे पाँव' का आशय सावधानी, विनम्रता और शांति से उस बीते संसार में प्रवेश करना है जिसकी उपस्थिति खंडहरों में अब भी अनुभव की जा सकती है।

चरण 1: शीर्षक के दोनों अंशों का आशय समझिए 'अतीत' सिंधु घाटी की प्राचीन सभ्यता और उसके नगर-जीवन की ओर संकेत करता है। 'दबे पाँव' उस अनुभव का सूचक है जिसमें यात्री किसी पुराने, शांत संसार के बीच धीरे-धीरे चलता है। लेखक केवल इमारतों का विवरण नहीं देता, बल्कि उनके भीतर कभी जीवित रहे लोगों की उपस्थिति भी अनुभव करता है। उत्तर में इस भाव को पाठ के ठोस उदाहरणों से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 2: पाठ से संबंधित उदाहरण चुनिए मोहनजोदड़ो की सड़कें, गलियाँ, मकान, कुएँ और स्नानागार प्राचीन नगर के व्यवस्थित जीवन की झलक देते हैं। इन अवशेषों के बीच घूमते हुए लेखक के लिए वर्तमान और अतीत की दूरी कम हो जाती है। सभ्यता का सौंदर्यबोध और नागरिक व्यवस्था भी उसका ध्यान खींचते हैं। इसलिए शीर्षक में केवल इतिहास की जानकारी नहीं, इतिहास को आत्मीयता से महसूस करने की प्रक्रिया निहित है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर लेखक ओम थानवी ने 'अतीत में दबे पाँव' शीर्षक इसलिए चुना है कि मोहनजोदड़ो के अवशेषों में घूमना उन्हें प्राचीन सभ्यता के जीवित संसार में चुपचाप प्रवेश करने जैसा लगता है। यहाँ सड़कें, गलियाँ, घर, कुएँ और विशाल स्नानागार तत्कालीन नगर-जीवन का अनुभव कराते हैं। खंडहरों में चलते हुए लेखक बीते समय की गतिविधियों और मनुष्यों की उपस्थिति महसूस करता है। 'दबे पाँव' में उस शांत संसार के प्रति संवेदनशीलता और सम्मान भी है। लेखक इतिहास को दूर से देखने के बजाय उसके बीच जाकर अनुभव करता है। इस प्रकार शीर्षक यात्रा, स्मृति और अतीत से आत्मीय संवाद को सार्थक रूप में व्यक्त करता है।

चरण 4: निष्कर्ष 'अतीत में दबे पाँव' शीर्षक मोहनजोदड़ो के अवशेषों के माध्यम से बीते नगर-जीवन में लेखक के शांत, संवेदनशील और आत्मीय प्रवेश को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक की सार्थकता लिखते समय 'अतीत' और 'दबे पाँव' दोनों का अर्थ स्पष्ट करके गलियों, घरों और स्नानागार जैसे पाठगत उदाहरण जोड़िए।